



बंगाल में भगवा सूर्योदय...

4 मई 2026 की ढलती शाम ने पश्चिम बंगाल को एक ऐसे भगवा रंग में रंगते देखा, जिसकी कल्पना शायद 15 साल पहले तक बीजेपी ने भी नहीं की थी. तब 2011 के चुनाव में 288 सीटों पर चुनाव लड़ने वाली बीजेपी खाता तक नहीं खोल सकी थी. लेकिन अब 15 वर्षों से चला आ रहा ममता युग इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुका है. कालीघाट से उठने वाली हुंकार अब शांत है और नबन्ना (सचिवालय) की सीढ़ियों पर उस कमल ने अपनी जगह बना ली है, जिसे बंगाल की मिट्टी में जड़ें जमाने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा।

नईदिल्ली> पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव की मतगणना के रूझानों में पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में भारी उलटफेर की संभावना के साथ भारतीय जनता पार्टी बंगाल में अपने दम पर जबरदस्त बहुमत हासिल करने जा रही है वहीं तमिलनाडु में अधिनेता विजय के करिश्में के दम पर टीवीके स्पष्ट रूप से सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी है। केरल में सत्ता परिवर्तन के संकेतों के बीच एक दशक बाद कांग्रेस के नेतृत्व में संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा की सरकार बनने की प्रबल संभावना है।

असम और पुडुचेरी में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार की वापसी निश्चित लग रही है। चुनाव आयोग के रूझानों के आंकड़ों के अनुसार एक बजे तक पश्चिम बंगाल में एगिजट पोल के अनुमानों के अनुरूप भाजपा को शुरूआती रूझानों में स्पष्ट बढ़त मिल रही है और वह अकेले दम पर जबरदस्त बहुमत हासिल करने जा रही है। राज्य की 294 विधानसभा सीटों में से 284 के आरंभिक रूझानों में विपक्षी भाजपा 187 तो सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस केवल 92 सीटों पर आगे चल रही है। वर्ष 2021 के चुनावों में तृणमूल ने

यह टीएमसी के भय पर पीएम मोदी के भरोसे की जीत

नईदिल्ली। पश्चिम बंगाल की 293 सीटों पर मतगणना जारी रहने के दौरान, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सत्तारूढ़ अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस पर अपनी महत्वपूर्ण बढ़त बनाए रखी है और साथ ही शुरूआती जीत भी दर्ज की है। वर्तमान में देखे तो भाजपा 205 सीटों पर या तो आगे है या जीत ली है। इस जीत को लेकर गृह मंत्री अमित शाह का बयान सामने आया है। अमित शाह ने एक्स पर लिखा कि बंगाल की जनता को कोटि-कोटि नमन। यह प्रचंड जनादेश भय, तुष्टीकरण और घुसपैठियों के संरक्षकों को बंगाल की जनता का करारा जवाब है।



220 तो भाजपा ने 71 सीटें जीती थी। तमिलनाडु में भी रूझानों में एगिजट पोल के विपरीत भारी उलट फेर देखने को मिला है। राज्य में अभी तक रूझानों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत के संकेत नहीं हैं लेकिन विधानसभा की 234 में से 224 सीटों के रूझानों में टी वी के अप्रत्याशित रूप से 110 सीटों से साथ सबसे आगे है। अन्नाद्रमुक दूसरे स्थान पर 57 सीटों पर तथा सत्तारूढ़ द्रमुक 48 सीटों पर आगे रहते हुए तीसरे

स्थान पर है। कांग्रेस 4 तथा पीएमके 5 सीट पर आगे है। पिछले चुनाव में द्रमुक गठबंधन को 158 जबकि अन्नाद्रमुक गठबंधन को 69 सीटें मिली थी। असम विधानसभा की 126 में से 124 सीटों के रूझान मिलने हैं और इनमें राजग को स्पष्ट बहुमत मिलता दिख रहा है। रूझानों में भाजपा को 79 , कांग्रेस को 24 , असम गण परिषद को 09 और बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीओपीएफ)

नवीन ने राज्य की जनता के प्रति जताया आभार

नयी दिल्ली। भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने पश्चिम बंगाल में पार्टी को मिली जीत के लिए राज्य की जनता के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सशक्त समृद्ध और सुरक्षित बंगाल के निर्माण के लिए मिलकर काम करने का आह्वान किया है। श्री नवीन ने सोमवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि पश्चिम बंगाल की देवतुल्य जनता को इस ऐतिहासिक जनादेश के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद। चैतन्य महाप्रभु , स्वामी विवेकानंद और हमारे पथप्रदर्शक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसी महान विभूतियों की यह पावन धरा अब शांति, समृद्धि और सुशासन के एक नए युग की साक्षी बनेगी।

चुनाव परिणाम भाजपा की दृष्टि से ऐतिहासिक: साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने चार राज्य और एक केंद्र शासित प्रदेश के विधानसभा चुनाव और परिणामों पर भारतीय जनता पार्टी की बड़ी जीत पर खुशी जताई है। प्रदेश के मुख्यमंत्री साय ने कहा दो राज्यों- पश्चिम बंगाल और असम में निश्चित रूप से भारतीय जनता पार्टी की स्पष्ट बहुमत की सरकार बना रही है। अन्य राज्यों में भी एनडीए की मजबूत स्थिति की चर्चा करते हुए स्वयं केरल का दौरा किया और वहां के अनुभवों को साझा करते हुएकहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लोगों का विश्वास बढ़ा है, जिसका लाभ एनडीए को मिला।

विकास और राष्ट्रवाद की जीत: अरुण साव

रायपुर। छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी विधानसभा चुनाव परिणामों में भारतीय जनता पार्टी और एनडीए की ऐतिहासिक बढ़त व शानदार सफलता पर हर्ष व्यक्त करते हुए इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व और जनता के अटूट विश्वास की जीत बताया है। पश्चिम बंगाल के नतीजों पर प्रतिक्रिया देते हुए उप मुख्यमंत्री श्री साव ने कहा कि पश्चिम बंगाल में भाजपा पहली बार स्पष्ट और प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनाने की ओर अग्रसर है। यह ऐतिहासिक जनादेश भारतीय जनसंघ के संस्थापक, महान राष्ट्रभक्त अमर बलिदानी डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को पश्चिम बंगाल की पावन धरा की ओर से दी गई सच्ची श्रद्धांजलि है।

आज से बंगाल भयमुक्त हुआ : प्रधानमंत्री मोदी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत को राय की जनता की दशकों की प्रतीक्षा की पूर्ति बताते हुए सोमवार को कहा कि आज से बंगाल भय से मुक्त हुआ राय अब विकास की राह पर आ गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि राय में अब आयुष्मान कार्ड बंटेंगे और घुसपैठियों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

श्री मोदी पांच विधान सभा चुनावों की मतगणना में तीन रायों पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी में भाजपा-राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की ऐतिहासिक सफलताओं पर पार्टी मुख्यालय पर शाम को आयोजित विजयोत्सव समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर पार्टी अध्यक्ष नितिन नवीन, पूर्व अध्यक्ष राजनाथ सिंह तथा अमित शाह भी मंच पर उपस्थित थे। पार्टी मुख्यालय पर उपस्थित खुशी और उत्साह से भरपूर कार्यकर्ताओं और समर्थकों संबोधित करते हुए श्री मोदी ने पश्चिम बंगाल की जीत को देश भक्ति के गीत वंदे मातरम् के रचयिता ऋषि कवि बंकिमचंद्र चटोपाध्याय को समर्पित करते हुए कहा कि आज जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपनों के पूरा होने का दिन है।

श्री मोदी ने डॉ मुखर्जी को याद करते हुए कहा, उन्होंने (डॉ मुखर्जी ने) जिस सशक्त और समृद्ध बंगाल का सपना देखा था, वो सपना कई बंगाल की जनता ने हम भाजपा कार्यकर्ताओं को वो अवसर दिया है। श्री मोदी ने घोषणा की, बंगाल के भाग्य में आज से एक नया अध्याय जुड़ गया है। आज से बंगाल भयमुक्त हुआ है और विकास के भरोसे से युक्त हुआ है। श्री मोदी ने राय की आगे की यात्रा में सभी दलों से सहयोग की भावना के साथ काम करने का आग्रह करते हुए कहा, आज जब बंगाल ने परिवर्तन के नए दौर में प्रवेश किया है, तो मैं बंगाल

के हर राजनीतिक दल से एक आग्रह भी करना चाहता हूं, बंगाल में बीते दशकों में राजनीतिक हिंसा की वजह से न जाने कितनी जिंदगियां बर्बाद हो गईं। मेरा स्पष्ट मानना है कि आज से बंगाल की इन चुनावी आदतों में बदलाव आना चाहिए। श्री मोदी ने कहा, आज जब भाजपा जीती है, तो बदला नहीं, बदलाव की बात होनी चाहिए। भय नहीं, भविष्य की बात होनी चाहिए।

श्री मोदी ने पश्चिम बंगाल में इस बार के चुनाव को इस लिए भी बहुत खास बताया कि वहां इस बार चुनाव शांतिपूर्ण रहा तथा राय में पहली बार डर नहीं, लोकतंत्र जीता है। उन्होंने कहा, आप याद कीजिए, बंगाल चुनाव के समय कैसी खबरें आती थीं। हिंसा, डर और निर्दोष लोगों की मौतें। लेकिन इस बार पूरे देश ने एक नई खबर सुनी कि पश्चिम बंगाल में शांतिपूर्ण मतदान हुआ। पहली बार ऐसा हुआ कि चुनावी हिंसा में एक भी निर्दोष नागरिक की जान नहीं गई।लोकतंत्र के इस महापर्व में बंदूक की आवाज नहीं, जनता-जनार्दन की आवाज गूंजी। प्रधानमंत्री ने कहा कि पश्चिम बंगाल में अब भय नहीं, भविष्य की बात होनी चाहिए।

श्री मोदी ने कहा, इस जीत के साथ-साथ वंदे मातरम् के 150वें वर्ष में भारत माता को और ऋषि बंकिम की ओर बंगाल के लोगों ने अपना सादर नमन प्रेषित किया है। योगिराज श्री अरविंदो को भी मतदाताओं ने ऐतिहासिक श्रद्धांजलि दी है।प्रधानमंत्री ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता के रूप में उनके मन में यह विचार आ रहा है कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की आत्मा को आज कितनी शांति मिली होगी जिन्होंने 1951 में जनसंघ की स्थापना करके प्रत्येक कार्यकर्ता को संदेश दिया था कि देश के लिए जीना है और देश के लिए मरना है। उन्होंने अपने जीवन से यह बात स्वयं साबित भी किया कि राष्ट्र सर्वोपरि का मंत्र लेकर चलने वाले अपना जीवन देने में एक पल का भी संकोच नहीं करते।

15 हजार वोटों से हार गयीं ममता बनर्जी

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी राज्य की भवानीपुर विधानसभा सीट से चुनाव हार गयी हैं। उन्हें उनके निकटतम विरोधी उम्मीदवार शुभेंद्र अधिकारी ने 15, 105 मतों से पराजित किया।भाजपा के शुभेंद्र अधिकारी ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी उम्मीदवार ममता बनर्जी के खिलाफ भवानीपुर विधानसभा सीट पर भारी जीत हासिल करने के बाद अपना जीत का प्रमाण पत्र दिखाया। इस दौरान उन्होंने कहा कि यह बहुत महत्वपूर्ण था। ममता बनर्जी को हराना बेहद जरूरी था। यह ममता बनर्जी की राजनीति से विदाई है... इस बार भी वह 15,000 से अधिक वोटों से हार गईं। मुसलमानों ने खुलकर उनके पक्ष में मतदान किया। वार्ड नंबर 77 में मतदान करने आए सभी मुसलमानों ने ममता को वोट दिया, और हिंदुओं, सिखों, जैनों और बौद्धों ने मुझे आशीर्वाद दिया और मुझे जीत दिलाई। यह जीत हिंदुत्व की जीत है... सीपीएम के सभी मजबूत समर्थकों ने मुझे वोट दिया।



तमिलनाडु में किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं

चेन्नई। तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में फिल्म अधिनेता से राजनेता बने विजय की पार्टी तमिललागा वेट्टी कण्गम (टीवीके) सबसे बड़े दल के रूप में उभरी है। पार्टी ने कुल 234 सीटों में से 70 सीटें जीत ली है और 36 सीटों पर उसके उम्मीदवार आगे चल रहे हैं। तमिलनाडु के चुनाव में अब तक स्पष्ट बहुमत किसी भी पार्टी को मिलता नजर नहीं आ रहा है। मतगणना में अब तक घोषित नतीजों और रूझानों के अनुसार राज्य में त्रिशंकु विधानसभा की संभावना प्रबल दिख रही है। राज्य में टीवीके पहली बार विधानसभा चुनाव में उतरी है और उसने तमिलनाडु में लम्बे समय से चली आ रही दो दलीय व्यवस्था को इस बार तोड़ दिया है। चुनाव आयोग के अब तक के आंकड़ों के अनुसार 234 सीटों के रूझान एवं नतीजों में द्रमुक पार्टी ने 37 सीटें जीत ली हैं और 22 सीटों पर उसके उम्मीदवार आगे चल रहे हैं। उसकी सहयोगी कांग्रेस ने दो सीट जीती है और तीन सीटों पर बढ़त बनाये हुये है। अन्नाद्रमुक 29 सीटें जीतने के साथ 18 सीटों पर बढ़त बनाये हुये है। इसके अलावा पीएमके ने दो सीटें जीती है और तीन पर बढ़त बनाये हुये है।भाकपा एक सीट पर विजयी और एक सीट पर बढ़त बनाये हुये है। आईयूएमएल ने दो सीटें जीती हैं।

केरल की जनता के विश्वास पर खरा उतरेंगे : जयराम

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव में गठबंधन की जीत के लिए केरल की जनता का आभार व्यक्त करते हुए कहा है कि उसने संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) को भारी बहुमत देकर सेवा का अवसर दिया है और पार्टी इस गठबंधन के साथ खरी प्रतिबद्धता के साथ काम करेगी। कांग्रेस संचार विभाग के प्रभारी जय राम रमेश ने सोमवार को सोशल मीडिया एक्स पर एक संदेश में कहा कि कांग्रेस अपनी जिम्मेदारी को भली-भांति समझती है और केरल की जनता ने जो भरोसा जताया है, उस पर पूरी निष्ठा के साथ खरी उतरेगी। उन्होंने कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन को जीतने के लिए केरल के लोगों का आभार जताया और कहा कि अन्य राज्यों में आए नतीजे पार्टी की अपेक्षाओं से भले ही कम रहे हैं, लेकिन कांग्रेस न तो निराश है और न ही हताश। पार्टी विचारधारा की लड़ाई लड़ रही है और एकतंत्र एवं झूठ के खिलाफ लोकतंत्र और सत्य की इस लड़ाई का रास्ता लंबा और कठिन होता है, फिर भी पार्टी संकल्प और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ती रहेगी।



देश में इंडिया गठबंधन का अब कोई भविष्य नहीं है: पूनावाला

नयी दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कई राज्यों के विधानसभा चुनावों की मतगणना के रूझानों को लेकर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर हमला बोला है और कहा कि वह (श्री गांधी) इंडिया गठबंधन को संभालने में नाकाम साबित हुए हैं, जिसके कारण इस गठबंधन का अब कोई भविष्य नहीं है। श्री पूनावाला ने सोमवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि देश में लगातार 12 सालों तक सत्ता में रहने के बावजूद नए राज्यों में भाजपा की सरकारें बन रही हैं। भाजपा का वोट शेरार बढ़ रहा है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की वजह से लोगों का भाजपा पर भरोसा और भी मजबूत हो रहा है। उन्होंने कहा कि इस चुनाव का सबसे बड़ा नतीजा यह है कि इंडिया गठबंधन पूरी तरह से टूट गया है और खत्म हो गया है। श्री गांधी इंडिया गठबंधन का नेतृत्व करने में नाकाम साबित हुए हैं।पूरे चुनाव के दौरान यह साफ दिखा कि श्री इंडिया गठबंधन को संभालने में असफल रहे।



विकसित पश्चिम बंगाल बनाने के लिए काम करेगी भाजपा : नड्डा

नयी दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पूर्व अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पश्चिम बंगाल में भाजपा को मिली जीत को विश्वास का उदय बताते हुए कहा है कि अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार आमार सोनार बांग्ला के ध्वेय से विकसित पश्चिम बंगाल बनाने के लिए काम करेगी।श्री नड्डा ने सोमवार को बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, विश्वास का उदय – बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक महाविजय। उन्होंने कहा कि आज का दिन भारतीय जनता पार्टी के प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए भावुक पल है।पश्चिम बंगाल में भाजपा की अभूतपूर्व महाविजय श्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और जनकल्याणकारी नीतियों पर जनता की मुहर और तृणमूल कांग्रेस के कुशासन, भ्रष्टाचार, टोलाबाजी, घुसपैठ, तुष्टीकरण, अराजकता व गुंडागर्दी की करारी हार है।उन्होंने कहा कि इतिहास गवाह है कि बंगाल जब परिवर्तन ढान लेता है तो कोई भी ताकत उसे नहीं रोक पाती।



पश्चिम बंगाल में भय की हार, भरोसे की जीत

कृष्णमोहन झा

पश्चिम बंगाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रचंड लहर में ममता बनर्जी का किला ढह चुका है।भारतीय जनता पार्टी (पूर्ववर्ती जनसंघ) के संस्थापक स्व.डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के गृहराज्य पश्चिम बंगाल के विधान सभा चुनावों में भाजपा ने प्रचंड बहुमत हासिल करके इतिहास रच दिया है।पश्चिम बंगाल विधानसभा के अभूतपूर्व चुनावों के अब तक घोषित नतीजों से भाजपा को जो अभूतपूर्व खुशी हो रही होगी उसे समझना कठिन नहीं है। इसमें दो राय नहीं हो सकती कि भाजपा ने पश्चिम बंगाल विधानसभा के इन चुनावों को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न

बना लिया था इसलिए भाजपा शासित 19 राज्यों के मुख्यमंत्रियों,सैकड़ों पार्टी पदाधिकारियों और हजारों,कार्यकर्ताओं की फौज ने पार्टी को पश्चिम बंगाल में पहली बार सत्ता की दहलीज तक पहुँचाने के लिए रात दिन एक कर दिये थे। राज्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने स्वयं ही पार्टी के चुनाव अभियान की बागडोर संभाल रखी थी देश के किसी राज्य में चुनाव प्रक्रिया के दौरान उपद्रवी तत्वों पर अंकुश लगाने के लिए चप्पे चप्पे पर सुरक्षा बलों की इतनी बड़ी संख्या में तैनाती भी संभवतःपहले कभी नहीं की गई होगी। कहने का तात्पर्य यह कि इतनी ऐहतियात बरतने के बाद राज्य में

पहली बार भाजपा की सरकार बनने में संशय की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं बची थी राज्य में दूसरे और अंतिम चरण का मतदान समाप्त होने के तत्काल बाद जब 8 में से 6 एजेंसियों ने अपने एक्जिजट पोल में भाजपा को बहुमत मिलने की भविष्यवाणी कर दी तब अनेक राजनीतिक विश्लेषकों ने भी उसे अतिशयोक्ति मान कर यह राय व्यक्त की थी कि पश्चिम बंगाल की राजनीति में ममता बनर्जी का ऐसा पराभव संभव नहीं है लेकिन चुनाव परिणामों ने साबित कर दिया है कि ममता बनर्जी अपनी सरकार के विरुद्ध जनता में तेजी से बढ़ते असंतोष का अंदाज़ा लगाने में चूक गई ।ममता



बनर्जी राज्य में गत डेढ़ दशकों से सत्तारूढ़ अपनी पार्टीतृणमूल कांग्रेस की शोचनीय पराजय के लिए भले ही एस आई आर के विजयेन्द्रा उद्धारण लेकिन इस कड़वी हकीकत से उन्हें मुंह नहीं मोड़ना चाहिए कि पिछले पांच सालों में चरम पर पहुंची एंटी इंकम्बेसी ने उनकी पार्टी को सत्ता से बाहर का

दरवाजा दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ममता बनर्जी को पूरी विनम्रता के साथ अब यह स्वीकार करने का साहस दिखाना चाहिए कि गत पांच सालों में उजागर हुए भ्रष्टाचार के गंभीर मामलों में तृणमूल कांग्रेस के मंत्रियों और नेताओं की संलिप्तता , संदेश खाली में महिलाओं के शारीरिक शोषण के आरोप, आरजीकर मेडिकल कालेज में महिला डाक्टर की बलात्कार के बाद हत्या सहित राज्य के विभिन्न भागों में महिला उत्पीड़न की घटनाएं, तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ताओं की निरंकुशता और युवाओं की बढ़ती बेरोजगारी जैसे कारकों ने उनके पांव के नीचे की जमीन छीन ली। पश्चिम बंगाल

विधानसभा के इन चुनावों में जब 92 प्रतिशत से अधिक का रिकार्ड मतदान हुआ उसी समय यह संकेत मिल गये थे कि इस बार मतदाताओं ने निर्भय होकर मतदान किया जिसका श्रेय केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को जाता है जिन्होंने राज्य में एक पखवाड़े से अधिक समय तक मौजूद रहकर मतदाताओं के मन में दारुणा का वोट निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मतदान की तारीख के पहले से ही बड़ी संख्या में केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती ने मतदाताओं के मन में यह भरोसा जगाया कि अब उन्हें तृणमूल कांग्रेस के निरंकुश कार्यकर्ताओं से डरने की आवश्यकता नहीं है। इतना ही नहीं,केंद्रीय गृह मंत्री ने पश्चिम बंगाल

की जनता को आशस्त कर दिया था कि चुनाव परिणामों की घोषणा के बाद भी केंद्रीय सुरक्षा बलों को एकदम वहां से नहीं हटाया जाएगा। गौर तलब है कि गत विधानसभा चुनावों के बाद तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ताओं के एक वर्ग पर राज्य के उन क्षेत्रों में हिंसक गतिविधियों में लिप्त होने के आरोप लगे थे जहां तृणमूल कांग्रेस को पराजय का सामना करना पड़ा था।इन चुनावों में भाजपा ममता बनर्जी की मुस्लिमतुष्टीकरण की नीति पर निशाना साधकर जिस तरह हिन्दू मतदाताओं को एकजुट करने में सफल हुई उसने भी भाजपा की प्रचंड जीत का मार्ग प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

बस्तर इनोवेशन महाकुंभ, बेरोजगारों को मिलेगी नौकरी की जानकारी

बस्तर इनोवेशन महाकुंभ की शुरुआत हो गई है. राज्यपाल रमन डेका ने इसे मानव संसाधन विकास में मील का पत्थर करार दिया है.

बस्तर। नक्सलवाद के खात्मे के बाद बस्तर में लगातार विकास के कार्य किए जा रहे हैं। सरकार की तरफ से विकास को गति दी जा रही है। इस क्रम में सोमवार 4 मई को बस्तर के शहीद कर्मा युनिवर्सिटी में विशेष आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को बस्तर इनोवेशन का नाम दिया गया है। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में छात्रों के स्टार्टप को लेकर इस कार्यक्रम को आयोजित किया गया। बस्तर यूनिवर्सिटी के कुलपति मनोज श्रीवास्तव ने बताया कि इस कार्यक्रम में आदिवासी छात्र और बड़ी संख्या में पुनर्वासित माओवादी शामिल हुए। जिन्हें नया व्यवसाय शुरू करने के लिए ट्रेनिंग इस कार्यक्रम के माध्यम से



दी जा रही है। बस्तर संभाग से 1032 छात्र इस कार्यक्रम में शामिल हुए। जिनमें 642 छात्राएं व 389 छात्र शामिल हैं। जो

कांकेर, नारायणपुर, कोंडागांव, बस्तर, सुकमा, दंतेवाड़ा और बीजापुर से हैं। बड़ी संख्या में छात्र इस कार्यक्रम को सोशल

मीडिया के माध्यम से देखेंगे। सभी सत्रों के लिए अनुवाद बस्तर की लोकल हल्बी भाषा में भी किया जा रहा है। करीब 200 की संख्या में पुनर्वासित माओवादी भी उद्योग, रोजगार, स्टार्टअप की शिक्षा ग्रहण करेंगे। पूरे भारत देश से करीब 50 से अधिक विशेषज्ञ इस कार्यक्रम में शामिल होकर बस्तर में युवाओं को शिक्षा दे रहे हैं। इस कार्यक्रम में मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, आईआईटी भिलाई, MFCC और CGCost के विशेषज्ञ शामिल हैं। इसके अलावा डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी और स्वालंबी भारत अभियान से सम्बंधित सदस्य भी इस कार्यक्रम में मौजूद हैं।

सगाई में पहुंचे लोग जब संजय गढ़पाले के अंतिम संस्कार में पहुंचे तो खून के आंसू रोने लगे



■ 15 अप्रैल को संजय की सगाई हुई. घर में शादी की तैयारियों की बातें होती थी

कांकेर। जिस तिरंगे में संजय लिपटा हुआ था वह जब उसके पिता को सौंपा गया तो उसे वे अपने सोने से लगाकर रोने लगे, मानो अपने जिगर के टुकड़े को वे सोने से लगाए हुए है। इधर जवान

बेटे का शव देखकर बेहाल हुईं मां अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो पा रही थी। शनिवार को कांकेर ब्लास्ट में शहीद हुए बस्तर फाइटर्स के जवान संजय गढ़पाले को रविवार सुबह नारायणपुर में गाई ऑफ ऑनर दिया गया। इसके बाद पार्थिव शरीर गृह ग्राम कांकेर के हाराडुला भेजा गया। तिरंगे में लिपटे संजय को जैसे ही परिवार और गांव वालों ने देखा तो वे अपनी छाती पीटने लगे।

पिता, मां, परिवार, और गांव वालों का रो रोकर बुरा हाल हो गया। कई गांवों के लोग संजय की आखिरी झलक पाने के लिए हाराडुला पहुंचे। जहां हर किसी की आंखों में आंसू नजर आए। लोग फफक फफक कर रोने लगे। भारी मन से संजय को अंतिम विदाई दी गई। शहीद जवान के पिता सूरज गढ़पाले ने बताया कि 2 मई शाम 4 बजे उन्हें घटना की जानकारी मिली। जिसके बाद से ही परिवार का बुरा हाल है।

पिता ने बताया कि बीते 15 अप्रैल को शहीद जवान की सगाई हुई थी, और जनवरी 2027 में शादी होनी थी। घर में अक्सर शादी की तैयारियों को लेकर बातें

होती थी। लेकिन संजय उससे पहले ही मंगेतर के साथ पूरे परिवार को छोड़कर चला गया। पिता ने बताया कि संजय बचपन से ही आर्मी में जाने का सपना देखता था। जिसके लिए ए। काफ़ी तैयारी करता था। छात्र जीवन में उसने हष्टष्ट भी ज्वाइन किया था। आर्मी ने नहीं होने के बाद देशसेवा केलिए बस्तर फाइटर्स ज्वाइन किया। 2 मई को नारायणपुर और कांकेर के बॉर्डर इलाके छोटेबेटिया थाना क्षेत्र के कोरोसकोड़ा में एरिया डोमिनेशन के दौरान नक्सलियों के प्लाटिड आईईडी में विस्फोट हो गया। इस घटना में 3 जवानों की मौके पर ही मौत हो गई। एक जवान ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

फायरिंग रेंज में अभ्यास के दौरान 303 राइफल से एक्सीडेंटल फायर

■ गर्दन में लगी चोट, अस्पताल में भर्ती

धमतरी। छत्तीसगढ़ के धमतरी में रूद्री स्थित फायरिंग रेंज में अभ्यास के दौरान बड़ा हादसा हो गया। सोमवार को नियमित अभ्यास के बीच एक 303 रायफल का चेंबर फटने से अंदर का शेल पास में खड़े नगर सेना के एक जवान को लग गई, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना से मौके पर हड़कंप मच गया।



जांच में यह सामने आया है कि फायरिंग के दौरान तकनीकी खराबी के कारण राइफल का चेंबर फटने से दुर्घटना होना सामने आई है।

इस हादसे के बाद पुलिस लाइन में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। अधिकारियों ने तत्काल घटना की जानकारी वरिष्ठ अधिकारियों को दी। प्रारंभिक जांच में यह सामने आया है कि फायरिंग के दौरान तकनीकी खराबी के चलते राइफल का चेंबर फटा, जिससे यह दुर्घटना हुई।

जिला अस्पताल धमतरी के सिविल सर्जन अरुण कुमार टोंडर ने बताया कि होम गाई के एक जवान चौबेताल टंडन को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वह माना का निवासी है। पुलिस फायरिंग के दौरान

मेटल पार्ट गर्दन को छूकर कान के पीछे से निकला है। एक्स रे रिपोर्ट के बाद आगे का इलाज किया जाएगा।

लमती डेम परियोजना पर फूटा ग्रामीणों का गुस्सा

खैरागढ़। जिले में लमती

नदी पर प्रस्तावित डेम परियोजना अब बड़े विवाद का रूप लेती जा रही है। ग्राम लछना, बोरला, महुआढार और कटेमा के सैकड़ों ग्रामीण जिला मुख्यालय पहुंचकर सड़क पर उतर आए। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि उनकी बात नहीं सुनी गई, तो आंदोलन और तेज होगा। इस पूरे मामले में सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि जिस जमीन को डेम के डुबान क्षेत्र में बताया जा रहा है, उसी जगह पर सरकार खुद विकास कार्य करा रही है। पंचायत के जरिए सीसी रोड का निर्माण जारी है, वहीं प्रधामंत्री आवास योजना के तहत 8 से 10 मकान बन रहे।

बीजापुर। जिला वनोपज सहकारी यूनियन मर्यादित बीजापुर के अंतर्गत संचालित प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों में तेंदूपता खरीदी और संग्रहण कार्य प्रारंभ हो चुका है। सबसे पहले भैरमगढ़ समिति के अंतर्गत आने वाले फड़ों में खरीदी कार्य शुरू किया गया, जहां तेंदूपता लेकर पहुंचे संग्राहकों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। इस आत्मीय पहल ने संग्राहकों में उत्साह और आत्मविश्वास दोनों को बढ़ाया, जिससे वे पूरे जोश के साथ संग्रहण कार्य में जुटे नजर आए। भैरमगढ़ के बाद जिले के अन्य फड़ों में भी आगामी 1–2 दिनों के



कोरबा। कोरबा पुलिस ने सजग कोरबा, सतर्क कोरबा% अभियान के तहत अवैध शराब के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी के निर्देशन में 2 और 3 मई को जिले भर में विशेष अभियान चलाकर अवैध शराब बनाने, बेचने और परिवहन करने वालों पर सख्त कार्रवाई की गई। दो दिन में कुल 26 प्रकरण दर्ज कर 28 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया

और 428.94 लीटर अवैध शराब जब्त की गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं समस्त एसडीओपी के मार्गदर्शन में जिले के सभी थाना-चौकी क्षेत्रों में लगातार दबिश दी गई। पुलिस टीमों ने जंगल और ग्रामीण इलाकों में सर्च अभियान चलाकर छिपाकर रखी गई महुआ शराब और भट्टियों को चिन्हित किया। मौके पर ही कई अवैध महुआ शराब भट्टियों को नष्ट कर संरचनाएं तोड़ दी गई।

भैरमगढ़ समिति में तेंदूपता संग्राहकों का तिलक लगाकर किया स्वागत



भीतर खरीदी कार्य प्रारंभ होने की पूरी तैयारी कर ली गई है। जिला यूनियन के अंतर्गत कुल 28 समितियों के 45 लॉट और 582 फड़ों में संग्रहण कार्य संचालित किया जा रहा है। विभागीय अधिकारियों के अनुसार सभी आवश्यक व्यवस्थाएं जैसे तौल कांटे, बोरियां, छायादार स्थल और पेयजल सुनिश्चित कर दी गई

कमर्शियल सिलेंडर के बढ़े दाम के खिलाफ प्रदर्शन



दुर्ग। दुर्ग में बढ़ती महंगाई को लेकर कांग्रेस ने एक बार फिर केंद्र सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है।दिनेिक उपयोग की वस्तुओं के दामों में लगातार बढ़ोतरी, एलपीजी सिलेंडर, पेट्रोल और डीजल की कीमतों में इजाफे के विरोध में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने चंडी मंदिर के पास जमकर प्रदर्शन किया।

इस दौरान सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे। प्रदर्शन का नेतृत्व दुर्ग ग्रामीण जिला

अध्यक्ष राकेश ठाकुर और दुर्ग शहर जिला अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल ने किया। कार्यकर्ताओं ने हाथों में महंगे सिलेंडर के खिलाफ पोस्टर और तख्तियां लेकर नारेबाजी की और बीजेपी सरकार पर सीधा निशाना साधा। कांग्रेस के जिला अध्यक्ष राकेश ठाकुर ने आरोप लगाया कि हर महीने की पहली तारीख को गैस सिलेंडर के दाम बढ़ाए जा रहे हैं। 1 मार्च को कमर्शियल सिलेंडर में 114।50 रुपये, 1 अप्रैल को 195।50 रुपये और 1 मई को 993 रुपये की बढ़ोतरी की गई। तीन महीनों में कुल 1303 रुपए की बढ़ोतरी ने आम जनता की कमर तोड़ दी है।

इसका असर सीधे लोगों की जेब पर पड़ रहा है, यहां तक होटलों में खाने-पीने की चीजों के दाम भी बढ़ गए हैं। पहले जो पनीर चिली 160 रुपये में मिलती थी, वह अब 250 रुपये तक पहुंच गई है- राकेश ठाकुर,जिलाध्यक्ष कांग्रेस वहीं धीरज बाकलीवाल ने कहा कि महंगाई लगातार बढ़ रही है और इसका सबसे ज्यादा असर आम आदमी पर पड़ रहा है। उन्होंने दावा किया कि पिछले कुछ महीनों में कमर्शियल सिलेंडर की कीमत लगभग दोगुनी हो चुकी है।दिसंबर 2025 में 1600 रुपये का सिलेंडर अब करीब 3100 रुपए तक पहुंच गया है।

छत्तीसगढ़

प्रमुख समाचार

186 पदों पर भर्ती के लिए 6 मई को लगेगा प्लेसमेंट कैंप

बलौदाबाजार। जिले के शिक्षित युवाओं के लिए एक बड़ी और राहत भरी खबर सामने आई है। नौकरी की तलाश कर रहे युवाओं को अब भटकने की जरूरत नहीं होगी, क्योंकि बलौदाबाजार में एक ही जगह पर कई कंपनियां भर्ती के लिए पहुंच रही हैं। कलेक्टर कुलदीप शर्मा के निर्देश पर जिला रोजगार कार्यालय की तरफ से 6 मई 2026 को प्लेसमेंट कैंप का आयोजन किया जा रहा है। यह कैंप लाईवलीहुड कॉलेज सकरी में सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक आयोजित होगा, जहां कुल 186 पदों पर भर्ती की जाएगी। इस प्लेसमेंट कैंप की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां अलग-अलग सेक्टर की कंपनियां भाग ले रही हैं। यानी युवाओं को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार नौकरी चुनने का मौका मिलेगा। कुल 5 निजी संस्थान इस रोजगार मेले में शामिल रहे हैं, जो शिक्षा, ऑटोमोबाइल, सिक्योरिटी, फाइटनेस और स्किल सेक्टर से जुड़े हैं। इस भर्ती प्रक्रिया में चयनित युवाओं को केवल बलौदाबाजार ही नहीं, बल्कि आसपास के जिलों और शहरों में भी काम करने का अवसर मिलेगा।

कलेक्टर यादव ने आधी रात को जिला अस्पताल का किया औचक निरीक्षण

राजनांदागांव। कलेक्टर श्री जितेन्द्र यादव ने बीती रात जिला अस्पताल का औचक निरीक्षण कर स्वास्थ्य सेवाओं की वास्तविक स्थिति का जायजा लिया। देर रात पहुंचे कलेक्टर ने अस्पताल में उपलब्ध व्यवस्थाओं, साफ-सफाई, मरीजों को मिल रही सुविधाओं एवं ड्यूटी पर तैनात स्टाफ की उपस्थिति की जांच की।कलेक्टर ने इमरजेंसी वार्ड, ओपीडी, वार्डों एवं दवा वितरण कक्ष का निरीक्षण किया। उन्होंने मरीजों एवं उनके परिजनों से बातचीत कर उपचार एवं सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। कलेक्टर ने अस्पताल में भर्ती मरीजों को समय पर उपचार



एवं आवश्यक दवा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने ड्यूटी पर तैनात डॉक्टरों, नर्सिंग स्टाफ एवं अन्य कर्मचारियों को निर्देशित किया कि मरीजों के उपचार में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाए और अस्पताल में व्यवस्थाएं बेहतर बनाए रहें।

मेरिट सूची में शामिल बेटियों का कलेक्टर ने किया सम्मान

महासमुंद। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा घोषित हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी मुख्य परीक्षा 2026 के परिणाम में महासमुंद जिले की छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जिले को गौरवान्वित किया है। कक्षा 10वीं बोर्ड परीक्षा में जिले की 8 छात्राओं तथा कक्षा 12वीं बोर्ड परीक्षा में 4 छात्राओं ने प्रदेश की टॉप-टैन सूची में स्थान प्राप्त कर जिले का नाम रोशन किया है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह ने आज छात्राओं और उनके पालको को सम्मानित किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कलेक्टर ने छात्राओं को गुलाब पुष्प, शॉल

कलेक्टर विनय कुमार लंगेह ने कहा बेटियों ने बढ़ाया जिले का मान



परिवार, विद्यालय और शिक्षकों के लिए गर्व का विषय है, बल्कि पूरे जिले के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने छात्राओं को भविष्य में भी इसी लगन और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने तथा अपने सपनों को साकार करने के लिए शुभकामनाएं दीं। कलेक्टर ने वालिकाओं द्वारा पूछे गए सवालों का क्रमशः जवाब दिया। उन्होंने कहा कि 12वीं के पश्चात स्नातक

परीक्षा आवश्यक है। साथ –साथ अपने विशेष लक्ष्य की तैयारी करते रहे। छात्राओं ने सिविल सर्विसेस और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के संबंध में मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस अवसर पर कक्षा 10वीं की टॉपर छात्राओं में एकलव्य इंग्लिश स्कूल अर्जुदा की कु. संस्था नायक ने कहा कि वे सीजीपीएससी के माध्यम से प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती हैं। एकलव्य इंग्लिश मीडियम हायर सेकेण्डरी स्कूल बलोदा की कु. परीरानी प्रधान ने मेडिकल क्षेत्र में जाने की इच्छा जताई। एकलव्य इंग्लिश स्कूल अर्जुदा की कु. रानू सिद्धीमयी साहू, कु.

रेणुका प्रधान, कु. चाहत चौधरी, कु. तिषा साहू, कु. भारती चंदा एवं कु. लता चौधरी ने अलग-अलग क्षेत्रों में पढ़ाई कर कैरियर सवारा चाहती हैं। वहीं कक्षा 12वीं की टॉपर छात्राओं में के.जी. कॉन्वेंट हायर सेकेण्डरी स्कूल सरायपाली की कु. शहनाज परवीन एवं के.पी.आई. हायर सेकेण्डरी स्कूल चट्टीगिरोला सरायपाली की कु. गीतिका प्रधान ने कहा कि वे आई.ए.एस. की तैयारी करना चाहती है। इसी तरह सरस्वती शिशु मंदिर हायर सेकेण्डरी स्कूल बागाबाहरा की कु. पौर्वी देवान तथा एकलव्य इंग्लिश स्कूल अर्जुदा की कु. दिव्या अग्रवाल ने भी अपने अनुभव बताए।

जनसमस्या निवारण शिविर 6 मई को देवरीकला में

जीपीएम। सुशासन तिहार के

अंतर्गत जिले में दूसरा जन समस्या निवारण शिविर 6 मई बुधवार को जनपद पंचायत पेण्ड्रा के कलस्टर ग्राम पंचायत देवरीकला में पंचायत भवन प्रांगण में आयोजित किया गया है। शिविर का समय सुबह 10 से शाम 5 बजे तक रहेगा। देवरीकला में आयोजित शिविर में ग्राम पंचायत दमरम, गोंदा, तिलोरा, देवरीकला, मांटीमीकला, सकोला, कंचनडीह, भाड़ी विशेषरा, पिपलामार, कुदरी, देवरीखुर्द, पीथमपुर एवं अमराू शामिल किए गए हैं। कलेक्टर ने सभी विभागों के अधिकारियों को अपने अधिनस्थ कर्मचारियों के साथ शिविर में उपस्थित होने का आदेशित किया।

संक्षिप्त समाचार

पश्चिम बंगाल में झालमुड़ी के साथ जीत का स्वाद : वित्त मंत्री ओपी चौधरी

रायपुर। बंगाल में भाजपा की जीत पर



छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने सोशल मीडिया पर बंगाल के लोकप्रिय स्ट्रीट फूड ‘झालमुड़ी’ खाते हुए वीडियो पोस्ट किया है। इस मौके पर उनके बंगले के बाहर लोगों को भी मुफ्त में झालमुड़ी खिलाया गया। मंत्री चौधरी ने पोस्ट में लिखा है कि बचपन से झालमुड़ी मेरा पसंदीदा रहा है। झालमुड़ी के साथ जीत का स्वाद२। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज झालमुड़ी के माध्यम से बंगाल समेत पूरे देश की जनता को कनेक्ट करने का काम किया इसीलिए देश की जनता ऐसे नेतृत्व को आशीर्वाद देती है। झालमुड़ी खास तौर पर बंगाल की पहचान मानी जाती है, अब यह सिर्फ एक खाद्य पदार्थ नहीं बल्कि लोगों के बीच जुड़ाव और सादगी का प्रतीक बनता दिख रहा है।

बंगाल में जनता के विश्वास और भाजपा

सरकार के कार्यों का परिणाम : साय

बलरामपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव



साय सोमवार सुबह बलरामपुर भाजपा कार्यालय पहुंचे, जहाँ कार्यकर्ताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। इस दौरान सीएम साय ने पांच राज्यों के चुनावी रङ्गानों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि शुरुआती रङ्गान भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में दिखाई दे रहे हैं। यह जनता के विश्वास और भाजपा सरकार के कार्यों का परिणाम है। इसी के साथ ही मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पश्चिम बंगाल में भाजपा को बहुमत मिलने के रङ्गानों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे लोकतंत्र की जीत बताया और संबंधित राज्यों के मतदाताओं को बधाई दी। उन्होंने आगे कहा कि जनता ने विकास, सुशासन और जनकल्याण की राजनीति पर भरोसा जताया है। बता दें कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय रविवार को बलरामपुर के प्रवास पर पहुंचे थे। रात्रि विश्राम के बाद सोमवार सुबह वह भाजपा कार्यालय पहुंचे। उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ मुलाकात कर संगठनात्मक गतिविधियों और क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की। दौरे के समापन के बाद सीएम साय अपने अगले कार्यक्रम के लिए रवाना हो गए। उनके दौरे को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल देखा जा रहा है।

भाजपा ने बंदूक की नोक पर ममता बैनर्जी के हाथ से सत्ता चुराया : दीपक बैज

रायपुर। पश्चिम बंगाल, असम, केरल,



तमिलनाडु और पुडुचेरी में हुए विधानसभा चुनाव परिणामों के रङ्गानों को लेकर पीसीसी चीफ दीपक बैज का बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने बंदूक की नोक पर ममता बैनर्जी के हाथ से सत्ता चुराया। दीपक बैज ने अपने बयान में कहा कि असम और पश्चिम बंगाल में भाजपा चुनाव नहीं लड़ रही थी। वहां तो ईडी, सीबीआई, चुनाव आयोग, केंद्र सरकार, मुख्यमंत्री, पूरा मंत्रीमंडल, पुलिस अधिकारी चुनाव लड़ रहे थे। ढाई लाख से ज्यादा पुलिस कर्मी और सेंट्रल फोर्स लगाकर चुनाव कराया गया है। बंदूक की नोक पर ममता बैनर्जी के हाथ से सत्ता चुराने का काम भाजपा ने किया है। वहीं उन्होंने आगे कहा कि भाजपा ने हाईजैक कर चुनाव परिणाम को अपने पक्ष में किया। ये जीत भाजपा को नहीं चुनाव आयोग और सहयोगी टीम की है।

गेऊर व्यापवर्तन योजना के लिए

33.70 करोड़ रुपये स्वीकृत

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन जल संसाधन विभाग द्वारा बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के विकासखण्ड-राजपुर की गेऊर व्यापवर्तन योजना के कार्य के लिए 33 करोड़ 70 लाख रुपये स्वीकृत किये गए हैं। प्रस्तावित कार्यों के उपरांत 770 हेक्टेयर खरीफ एवं 230 हेक्टेयर रबी सहित कुल 1000 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होगी। योजना के कार्यों को पूर्ण कराने के लिए मुख्य अभियंता हसदेव गंगा कछार जल संसाधन विभाग अंबिकापुर को प्रशासकीय स्वीकृति दी गई हैं।

सगुनी स्टापडेम तक पहुंच मार्ग के लिए

3.77 करोड़ रूपाए स्वीकृत

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन जल संसाधन विभाग द्वारा बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के विकासखण्ड-सिमगा की सगुनी स्टापडेम तक पहुंच हेतु सी.सी. रोड निर्माण कार्यों के लिए तीन करोड़ 77 लाख 30 हजार रूपए स्वीकृत किए गए हैं। निर्माण कार्य कराने के लिए मुख्य अभियंता महानदी गोदावरी कछार जल संसाधन विभाग रायपुर को प्रशासकीय स्वीकृति दी गई है।

सपना देखना और उसे लक्ष्य में बदलकर निरंतर प्रयास करना ही सफलता की कुंजी : मुख्यमंत्री

■बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के 10वीं-12वीं के मेधावी विद्यार्थियों का किया सम्मान

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने सोमवार को बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री श्री साय ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए हौसला बुलंद रखना सबसे आवश्यक है।

बलरामपुर स्थित सर्किट हाउस में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री साय ने विद्यार्थियों से आत्मीय संवाद किया और उनके भविष्य के लक्ष्यों के बारे में जानकारी ली। अधिकांश विद्यार्थियों ने डॉक्टर और इंजीनियर बनने की इच्छा व्यक्त की, वहीं कुछ ने भारतीय प्रशासनिक सेवा और न्यायिक सेवा में जाने का संकल्प व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने विद्यार्थियों के सपनों की सराहना करते हुए कहा कि सपना देखना और उसे लक्ष्य में बदलकर निरंतर प्रयास करना ही सफलता की कुंजी है।



उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि यदि समर्पण, अनुशासन और आत्मविश्वास के साथ मेहनत की जाए, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। उन्होंने आश्वासन दिया कि राज्य सरकार विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए हर संभव सहयोग प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के अभिभावकों एवं शिक्षकों को भी बधाई देते हुए कहा कि बच्चों की सफलता के पीछे उनके मार्गदर्शन, सहयोग और त्याग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इस अवसर पर जिले के कक्षा 12वीं के मेधावी

भाजपा एवं एनडीए की ऐतिहासिक जीत नए भारत के संकल्प की विजय : देव

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष किरण देव ने पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी विधानसभा चुनाव परिणामों में भाजपा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को मिली प्रचंड जीत पर हर्ष व्यक्त करते हुए इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और विकासवाद की जीत बताया है।

देव ने पश्चिम बंगाल के नतीजों को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि पश्चिम बंगाल में पहली बार भाजपा की पूर्ण बहुमत वाली सरकार का गठन राज्य के इतिहास में एक नया अध्याय है। यह जीत भारतीय जनसंघ (अब भाजपा) के संस्थापक और बंगाल के महान सपूत अमर बलिदानी डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को बंगाल की जनता की ओर से दी गई सबसे सच्ची और भावपूर्ण श्रद्धांजलि है। जिस एक विधान, एक निशान और एक प्रधान का सपना उन्होंने देखा था, बंगाल की जनता ने उस पर अपनी मुहर लगा दी है। देव ने कहा कि असम की जनता ने लगातार तीसरी बार भाजपा पर भरोसा जताकर यह साबित कर दिया



है कि उत्तर-पूर्व अब अलगाववाद नहीं, बल्कि विकास की मुख्यधारा के साथ मजबूती से खड़ा है। पुडुचेरी में भाजपा और गठबंधन के शानदार प्रदर्शन को उन्होंने सेवा और समर्पण की जीत बताया।

प्रदेश अध्यक्ष देव ने इस ऐतिहासिक सफलता के लिए केंद्रीय नेतृत्व, छत्तीसगढ़ समेत संबंधित राज्यों के कर्मठ कार्यकर्ताओं और जनता जनार्दन का आभार व्यक्त किया है। देव ने कहा कि यह नतीजे स्पष्ट करते हैं कि तुष्टीकरण की राजनीति का अंत हो चुका है और देश केवल राष्ट्रवाद व अंत्योदय की राजनीति को स्वीकार कर रहा है।

यह क्रांतिकारी जीत राजनीति में एक नए युग की परिचायक : पवन साय

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय ने प. बंगाल, असम और पुडुचेरी में भाजपा की ऐतिहासिक जीत पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि भाजपा/एनडीए की यह क्रांतिकारी जीत भारतीय राजनीति में विचारधारात्मक वर्चस्व के एक नए युग की परिचायक है। जहाँ विपक्ष क्षेत्रीय पहचान और तुष्टीकरण पर केंद्रित रहा, वहीं एनडीए ने विकास, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय सुरक्षा पर जनमत को चैतन्य किया और ये नतीजे बताते हैं कि अब भारतीय मतदाता क्षेत्रीय हितों को राष्ट्रीय सुरक्षा और अखंडता के साथ जोड़कर देख रहा है। साय ने कहा कि पश्चिम बंगाल के चुनाव परिणाम स्पष्ट करते हैं कि वहां की जनता ने तुष्टीकरण और हिंसा की राजनीति को नकार कर विकास और सोनार बांग्ला के संकल्प को चुना है। भाजपा ने बंगाल में एक नया इतिहास रचा है, जो लोकतंत्र की विजय है। असम की जनता ने मुख्यमंत्री डॉ. हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व और डबल इंजन सरकार के कार्यों पर पुनः विश्वास जताकर विकास की यात्रा को निरंतर रखने का जनादेश दिया है। पुडुचेरी में भी जनता ने एनडीए के सुशासन मॉडल को स्वीकारा है, जो



दक्षिण भारत में भाजपा और सहयोगियों की बढ़ती स्वीकार्यता का प्रमाण है। श्री साय ने कहा कि इन राज्यों के परिणाम छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश के कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार करेंगे। यह जीत राष्ट्रवाद और जनकल्याणकारी नीतियों के प्रति जनता के अटूट विश्वास का प्रतिबिंब है।

भाजपा ने पूरव और दक्षिण-पूर्व की ओर किया विस्तार : विजय शर्मा

छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने प. बंगाल, असम व पुडुचेरी राज्यों के परिणामों को छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश के कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार करने वाला बताया है। यह जीत तुष्टीकरण और अराजकता के विरुद्ध राष्ट्रवाद और सुशासन की विजय है। बंगाल से लेकर पूर्वोत्तर तक की जनता ने संदेश दे दिया है कि देश की प्रगति केवल भाजपा के नेतृत्व में ही सुरक्षित है। भाजपा ने अपनी पारंपरिक हिंदी पट्टी की छवि को तोड़कर पूरब और दक्षिण-पूर्व की ओर जो विस्तार किया है, वह ऐतिहासिक है। श्री शर्मा ने कहा कि पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी के चुनाव परिणाम भारतीय राजनीति के कैनवास पर दूरगामी प्रभाव डालने वाले हैं।

प्रधानमंत्री आवास से साकार हुआ सपना, मुख्यमंत्री ने कराया गृह प्रवेश

■ मुख्यमंत्री श्री साय ने पूछा आवास कोन भेजिस, मोहन ने कहा - मोदी जी ने

रायपुर। कबीरधाम जिले के ग्राम लोखान में सोमवार को एक अत्यंत भावनात्मक, आत्मीय और जनसरोकारों से जुड़ा दृश्य देखने को मिला, जब मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने एक सामान्य ग्रामीण के सादे निमंत्रण को न केवल स्वीकार किया, बल्कि उसे अपने व्यवहार से एक यादगार क्षण में परिवर्तित कर दिया। गांव में उनके आगमन से जहां उत्साह और जिज्ञासा का माहौल बना हुआ था, वहीं इस पूरे घटनाक्रम ने शासन और आमजन के बीच के आत्मीय संबंधों को भी जीवंत रूप में सामने रखा।

ग्राम लोखान निवासी मोहन मरावी के नए पक्के घर का आज गृह प्रवेश कार्यक्रम था। जैसे ही उन्हें यह जानकारी मिली कि मुख्यमंत्री गांव के दौरे पर हैं, वे बिना देर



किए सीधे उनके पास पहुंचे और अपने घर आने का न्योता दे दिया। यह एक ग्रामीण का असाधारण प्रेम भरा अनुरोध था, जिसे मुख्यमंत्री ने उसी सहजता और चिन्मत्ता के साथ स्वीकार किया और उनके घर पहुंचकर इस अवसर को विशेष बना दिया।

प्रधानमंत्री आवास से साकार हुआ सपना, मुख्यमंत्री ने कराया गृह प्रवेशमुख्यमंत्री के मोहन मरावी के घर पहुंचते ही वहां एक आत्मीय और पारिवारिक वातावरण बन गया। उन्होंने बिना किसी

औपचारिकता के पूरे स्नेह और अपनत्व के साथ नारियल फोड़ा, दीप प्रज्वलित किया और विधिवत पूजा-अर्चना के साथ गृह प्रवेश की रस्म संपन्न कराई। इस दौरान परिवार के सदस्यों के चेहरे पर जो संतोष, गर्व और खुशी झलक रही थी, वह इस बात का प्रतीक थी कि उनके सपनों का घर अब साकार हो चुका है। आसपास मौजूद ग्रामीणों ने भी इस क्षण को उत्साहपूर्वक देखा और मुख्यमंत्री की सादगीपूर्ण शैली की सराहना की।

इस आत्मीय संवाद के दौरान मुख्यमंत्री ने मुस्कुराते हुए मोहन से पूछा—आवास कोन भेजिस? इस पर मोहन ने सहजता के साथ उत्तर दिया—मोदी जी ने। यह छोटा-सा संवाद पूरे माहौल को भावनात्मक गहराई से भर गया और यह दर्शाता है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की गारंटी का क्रियावन्वयन सीधे

कवर्धा जिले के कुई-कुकदूर में अचानक उतरा सीएम साय का हेलिकॉप्टर

कवर्धा। प्रदेशभर में आम जनता की समस्याओं के समाधान के लिए सुशासन तिहार कार्यक्रम जारी है। अभियान के तहत मुख्यमंत्री साय लोगों के बीच पहुंचकर योजनाओं का फीडबैक ले रहे हैं। साथ ही फरियादों की समस्याओं को सुन रहे हैं। आज सीएम का हेलिकॉप्टर अचानक कवर्धा जिले के पंडरिया तहसील के कुई-कुकदूर में उतरा।



सीएम साय के आगमन पर स्थानीय विधायक भावना बोहरा समेत भाजपा नेताओं ने गमछा भेंटकर स्वागत किया। भारी संख्या में सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं। कलेक्टर, एसपी, डीएफओ सहित आला अधिकारी मौजूद है।

मुख्यमंत्री सबसे पहले प्रधानमंत्री आवास योजना के एक हितग्राही के घर पहुंचकर उनसे सीधा संवाद करेंगे और योजनाओं की जमीनी स्थिति का फीडबैक लेंगे। इसके बाद वे कमराखोल गांव में आम के पेड़ के नीचे चौपाल लगाकर ग्रामीणों से सीधे

चर्चा करेंगे। इस दौरान सीएम ग्रामीणों की समस्याएं सुनेंगे और प्रदेश व केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देंगे। साथ ही अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए जा सकते हैं कि योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। सुशासन तिहार के तहत 1 मई से 10 जून 2026 तक प्रदेशभर में जन समस्या निवारण शिविर आयोजित किए जाएंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में 15 से 20 ग्राम पंचायतों के समूह और शहरी क्षेत्रों में वार्ड क्लस्टर के आधार पर शिविर लगाए जाएंगे। इन शिविरों में न केवल जन समस्याओं का समाधान किया जाएगा, बल्कि शासन की योजनाओं के प्रति जन-जागरूकता भी बढ़ाई जाएगी।

यह जीत उन लाखों कार्यकर्ताओं के संघर्ष का परिणाम है : पाण्डेय

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

डॉ. (सुश्री) सरोज पाण्डेय ने कहा है कि पश्चिम बंगाल में भाजपा की सरकार का गठन तुष्टीकरण की राजनीति के अंत और विकासवाद की शुरुआत है। यह जीत उन लाखों कार्यकर्ताओं के संघर्ष का परिणाम है जिन्होंने बंगाल के लोकतांत्रिक मूल्यों को बचाने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर किया।



पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी के चुनाव परिणामों में भाजपा और एनडीए को मिली शानदार बढ़त और जीत पर हर्ष व्यक्त करते हुए सुश्री पाण्डेय ने इसे विकास और राष्ट्रवाद की जीत बताया है। पश्चिम बंगाल में पहली बार पूर्ण बहुमत के साथ भाजपा की सरकार बनना एक ऐतिहासिक युग परिवर्तन है। डॉ. (सुश्री) पाण्डेय ने असम में भाजपा की लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी को सुशासन की जीत बताया। उत्तर-पूर्व में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति अटूट विश्वास ने असम को विकास के नए सोपान पर खड़ा कर दिया है। इसी प्रकार पुडुचेरी में पार्टी का शानदार प्रदर्शन दक्षिण भारत में भाजपा के बढ़ते प्रभाव का प्रतीक है।

रायपुर में पानी के लिए हाहाकार कांग्रेसियों ने किया प्रदर्शन

सुबोध ने कहा- समस्या को नजर अंदाज कर रहा नगर निगम

रायपुर। राधानी रायपुर में पानी की गंभीर समस्या को लेकर कांग्रेस नेताओं और स्थानीय लोगों ने नगर निगम जोन-8 कार्यालय का घेराव कर विरोध प्रदर्शन किया। ये आंदोलन गृहियारी, अशोक नगर और बजरंग चौक के क्षेत्रों में लंबे समय से चल रही जल संकट की समस्या को लेकर किया गया।



रायपुर पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत वार्ड क्रमांक 19, दुर्गा चौक, बजरंग चौक, बड़ा अशोक नगर और आसपास की बस्तियों में पिछले कई दिनों से पानी की भारी किल्लत बनी हुई है। हालात इतने खराब हैं कि लोगों को पाने का पानी तक एक किलोमीटर दूर से लाना पड़ रहा है। अधिकांश बोरिंग खराब हो चुके हैं। पानी टैंकर की व्यवस्था भी पर्याप्त नहीं है, जिससे लोगों की परेशानी और बढ़ गई है।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश

नगर निगम के नेता प्रतिपक्ष आकाश तिवारी ने कहा कि पानी की कमी को सीधा असर लोगों के रोजगार पर पड़ रहा है। लोगों को दिनभर पानी का इंतजार करना पड़ता है, जिससे वे काम पर नहीं जा पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि टैंकर से पानी की सप्लाई भी न के बराबर है और जो पानी दिया जा रहा है, उसकी मात्रा भी पर्याप्त नहीं होती।

स्थानीय लोगों ने भी अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए बताया कि वे पिछले एक महीने से लगातार पानी की समस्या से जूझ रहे हैं। टैंकर समय पर नहीं आते और अगर आते भी हैं तो सभी तक पानी नहीं पहुंच पाता। ऐसे में रोजमर्रा के काम प्रभावित हो रहे हैं और कामकाजी लोगों को सबसे ज्यादा परेशानी उठानी पड़ रही है। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी है कि जब तक इस समस्या का स्थायी समाधान नहीं होता, उनका आंदोलन जारी रहेगा।

मेहनत व सहभागिता जुड़ती है, तभी विकास का वास्तविक स्वरूप सामने आता है। उन्होंने इस पहल को आत्मनिर्भरता, जनभागीदारी और सकारात्मक बदलाव का उत्कृष्ट उदाहरण बताते हुए कहा कि ऐसे प्रयास ही राज्य के समग्र विकास की नींव को मजबूत करते हैं। मोहन मरावी ने यह भी बताया कि उन्हें योजना के तहत राशि तीन किस्तों में प्राप्त हुई, जिसका उन्होंने पूरी जिम्मेदारी और समझदारी से उपयोग किया। इसी के परिणामस्वरूप वे अपने परिवार के लिए एक सुरक्षित और सम्मानजनक पक्का घर तैयार कर सके।

मुख्यमंत्री ने पूरे परिवार को नए घर की हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और इस अवसर को गांव के लिए भी एक प्रेरणादायक उदाहरण बताया, जो यह संदेश देता है कि संकल्प, श्रम और शासन की योजनाओं के समन्वय से हर सपना साकार हो सकता है।

चुनावी जीत-हार न बने जीवन-मरण का प्रश्न

डॉ हिदायत अहमद खान

देश के पांच राज्यों पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी में मतदान संपन्न होने के साथ ही सभी की नजरें मतगणना के साथ आने वाले रिजल्ट पर टिक गई हैं। इस बार के विधानसभा चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन की कवायद भर नहीं हैं, बल्कि लोकतंत्र की विश्वसनीयता, चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं की निष्पक्षता और जनता के भरोसे की परीक्षा भी साबित होने वाले हैं। सोमवार 4 मई को होने वाली मतगणना को लेकर जिस प्रकार राजनीतिक तापमान बढ़ा हुआ है, वह इस बात का संकेत है कि चुनाव पर तब जबकि चुनाव का खेल नहीं रहा, बल्कि राजनीतिक अस्तित्व का प्रश्न बन गया है। मतदान के बाद आमतौर पर राजनीतिक दल अपनी-अपनी जीत के दावे करते हुए देखे जाते हैं, लेकिन इस बार खासकर पश्चिम बंगाल में चुनावी प्रक्रिया को लेकर उठे विवादों ने पूरे देश का ध्यान खींचा है। मतगणना में पर्यवेक्षकों की नियुक्ति को लेकर मामला पहले हाईकोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा। यह स्थिति दर्शाती है कि चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता को लेकर संदेह बढ़ा है। हालांकि चुनाव आयोग ने अतिरिक्त पर्यवेक्षकों की नियुक्ति और नियमों के पालन का भरोसा दिया है, फिर भी सवाल यह है कि क्या केवल प्रशासनिक कदम जनता के विश्वास को बहाल करने के लिए पर्याप्त हैं? खासतौर पर तब जबकि चुनाव के दौरान यह सुनने को मिला कि पश्चिम बंगाल में चुनाव टीएमसी और भाजपा के बीच नहीं बल्कि टीएमसी और चुनाव आयोग के बीच हो रहा है। इसने न सिर्फ चुनाव प्रक्रिया को बल्कि निर्वाचन आयोग की विश्वसनीयता पर ही सवालिया निशान लगा दिया। चुनाव की तिथि घोषित होने से लेकर चुनाव प्रचार और मतदान के बीच और अब परिणाम आने से पहले तक जिस तरह का माहौल बनता दिखा है, वह लोकतंत्र के लिए चिंताजनक है। इसने न सिर्फ चुनाव आयोग की स्वतंत्र व निष्पक्ष के साथ ईमानदार प्रक्रिया पर संदेह पैदा किया बल्कि न्यायपालिका क्या कर रही है, इस पर भी नजर डालने को मजबूर किया है। न्यायालय की तारीख पर तारीख वाली परिपाटी से लेकर सख्त टिप्पणी के बाद फैसलों को रोके रखने ने लोगों को सवाल उठाने का मौका फराहम कराया है। जब यह कहा जाने लगे कि तमाम जांच एजेंसियां और स्वतंत्र संवैधानिक संस्थाएं भी केंद्र के इशारे पर उठ-बैठ और फैसले लेने से लेकर कार्रवाई करती नजर आ रही हैं तो वाकई चिंता का विषय हो जाता है। इस पूरी कवायद में विपक्ष के संविधान बचाओ मुहिम को सही ठहराया जाना उचित लगने लगता है। बहरहाल पांच राज्यों में मतदान पूर्ण होने के साथ ही अब नतीजे आने का इंतजार है, क्योंकि इससे यह भी मालूम चलेगा कि जो एग्जिट पोल्स अभी तक जो दावा करते आ रहे हैं वो कितने सही बैठते हैं। एग्जिट पोल्स ने इस बार अलग-अलग राज्यों में भिन्न-भिन्न तस्वीरें पेश की है। कहीं स्पष्ट बहुमत, तो कहीं कांटे की टक्कर दिखाकर लोगों का ध्यान भी खूब खींचा है। टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी के दावे 200 के पार से अलग पश्चिम बंगाल में मुकाबला बेहद करीबी बताया जा रहा है, जहां ‘साइलेंट वोटर’ निर्णायक भूमिका में होने का दावा भी किया जा रहा है। यह अनिश्चितता लोकतंत्र की खूबसूरती भी है और चुनौती भी। नतीजे प्रभावित न हों और हेर-फेर से मतदाताओं के मतों को बचाने मानों एक अलग ही संघर्ष जारी है। इसी प्रकार तमिलनाडु में संभावित राजनीतिक बदलाव का दावा किया जा रहा है। यह एक नई दिशा की ओर इशारा करता है। पारंपरिक द्रविड़ राजनीति के बीच नए चेहरे का उभार यह दर्शाता है कि मतदाता अब विकल्प तलाशने के लिए तैयार हैं, जो गलत भी साबित हो सकता है।

ज्ञान/मीमांसा

बंगाल में भाजपा की जीत के सात कारण

राहुल कुमार

पश्चिम बंगाल में 15 साल बाद सत्ता परिवर्तन होता दिख रहा है। राज्य की सत्ता पर काबिज ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस की विदाई लगभग तय हो गई है। भाजपा राज्य में पहली बार सरकार बनाती दिख रही है। पश्चिम बंगाल की राजनीति लंबे समय से क्षेत्रीय बनाम राष्ट्रीय दलों की लड़ाई का मैदान रही है। अब तक के परिणामों को देखें तो इस बार भाजपा ने न केवल अपने संगठनात्मक ढांचे को मजबूत किया, बल्कि चुनावी रणनीति, नैरेटिव और ब्रिथ स्तर तक पहुंच में भी महत्वपूर्ण सुधार किया। इसका असर उसकी सीटों की संख्या पर दिख भी रहा है। बंगाल में भाजपा की वापसी के कई महत्वपूर्ण कारण रहे हैं।

1. 15 साल की सत्ता विरोधी लहर

ममता बनर्जी 2011 में लेफ्ट को सत्ता से बेदखल कर बंगाल की मुख्यमंत्री बनी थीं।

इसके बाद से वह लगातार तीन बार राज्य का चुनाव जीतीं। स्ट्रीट फाइटर की छवि के साथ सत्ता में पहुंचीं ममता अपने 15 साल के कार्यकाल के दौरान भ्रष्टाचार, हिंसा जैसे मुद्दों से घिर गईं। भाजपा ने अपने चुनाव प्रचाप में भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अपराध, टीएमसी कार्यकर्ताओं की कथित गुंडागर्दी को बड़ा मुद्दा बनाया और जोर-शोर से जनता तक पहुंचाया।

पश्चिम बंगाल में चुनावी और राजनीतिक हिंसा लंबे समय से एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। भाजपा ने लगातार आरोप लगाया कि सत्ताधारी दल के कार्यकर्ता हिंसा में शामिल रहते हैं। संदेशखाली जैसी घटनाओं को भाजपा ने बड़े राजनीतिक मुद्दे के रूप में उठाया। इस नैरेटिव का असर खासकर महिला वोटर्स और शहरी मध्यम वर्ग पर पड़ा, जहां सुरक्षा एक प्रमुख चिंता बनकर उभरी। भाजपा ने इसे कानून का राज बनाम राजनीतिक संरक्षण के रूप में पेश किया। इसी बीच कोलकाता में हुई महिला डॉक्टर का दुर्घमर् और हत्या ने ममता सरकार की कानून व्यावस्था पर और अधिक सवाल खड़े कर दिए। आरजी कर मेडिकल कॉलेज की घटना के बाद महिलाओं की सुरक्षा को लेकर चिंताएं बढ़ीं हैं। भाजपा ने इस मुद्दे को पूरी तरह भुनाते हुए आरजी कर पीड़िता की मां को चुनावी मैदान में उतारा। वह चुनाव अभी तक के परिणामों में आगे चल रही हैं।

भ्रष्टाचार इस चुनाव का एक केंद्रीय मुद्दा



रहा। विभिन्न घोटालों और स्थानीय स्तर पर कट मनी के आरोपों ने सत्ताधारी दल की छवि को नुकसान पहुंचाया। भाजपा ने इसे व्यवस्थित तरीके से उभारा और इसे व्यवस्था परिवर्तन के एजेंडा से जोड़ा। ममता बनर्जी की छवि भले ही साफ-सुथरी रही हो, लेकिन उनके कई मंत्रियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे। यहां तक की टीएमसी के चुनाव प्रचार संभालने वाली एजेंसी आईपैक पर भी घोटाले का आरोप लगे।

पारा क्लब कोलकाता के इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। इनकी जड़ें संभवतः डेढ़ सदी पुरानी हैं, जब राष्ट्रीय आंदोलन के बाद कोलकाता में शारीरिक संस्कृति से जुड़े संगठन अस्तित्व में आए।

सीधे तौर पर नहीं लेकिन असलियत में इन क्लबों के सदस्य ममता बनर्जी और टीएमसी के कार्यकर्ता की तरह काम करते हैं। अगर इनकी कुल संख्या देखी जाए तो पश्चिम बंगाल में लगभग 1 लाख क्लब काम कर रहे हैं। साल 2025 में ममता बनर्जी की सरकार ने हर रजिस्टर्ड क्लब को 1.1 लाख रुपये दिए थे। इन क्लबों को बिजली बिल में 80 पैसेट छूट मिलती है, सरकारी कैंप लगाने पर कमीशन मिलता है, सरकार इनसे कोई फीस नहीं लेती और कई योजनाओं के लिए सीधे इन्हीं क्लबों को ही पैसा मिलता है। यही क्लब ममता सरकार में कट मनी का सबसे बड़ा अड्डा बने। जो कई जगहों पर स्थानीय प्रशासन से भी अधिक ताकतवर थे। यह क्लब राज्य में जबकर कट मनी बसूलते थे।

2- एसआईआर ने लिख दी पटकथा
बंगाल में एसआईआर प्रक्रिया को लेकर सबसे अधिक विवाद रहा। ममता बनर्जी एसआईआर में हुई कथित गड़बड़ियों के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट तक अपनी दलीलें देने पहुंचीं। मतदान के दो दिन पहले तक राज्य में वोटर के नाम जोड़े और काटे गए। राज्य में एसआईआर के दौरान 90 लाख के अधिक लोगों के नाम

मतदाता सूची से हटाए गए। राज्य में कई विधानसभाएं ऐसी थी, जहां लाखों मतदाताओं के नाम हटाए गए। इसके अलावा ममता बनर्जी ने आरोप लगाए थे कि टीएमसी के प्रभुत्व वाली सीटों पर एसआईआर के दौरान सबसे अधिक लोगों के नाम मतदाता सूची से काटे गए हैं। अब जबकि परिणाम से स्थिति साफ हो रही तो एसआईआर के दौरान काटे गए नामों का असर होता दिख रहा है।

3- युवा बने चुनाव में फैक्टर

प. बंगाल विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ा और निर्णायक फैक्टर युवा मतदाता बनकर उभरा है। चुनाव आयोग के अनुसार राज्य में कुल मतदाता 6.44 करोड़ हैं। इनमें 1.4 से 1.7 करोड़ युवा (18-29 आयु वर्ग) हैं। 18 से 19 वर्ष के 5.2 लाख से अधिक युवा पहली बार वोट डाल रहे थे। यानी हर चौथा वोटर युवा है। ऐसे में बेरोजगारी, भर्ती घोटाले, सिस्टम में भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों से यह वर्ग नाराज दिखाई दिया। 2021 के चुनावों में इस वोट बैंक को काफी साधने की कोशिश की गई थी। पहचान पत्र, छात्राओं के लिए योजनाएं, परंतु, इस बार के मुद्दे ज्यादा गहरे थे। इस बार चुनाव में बेरोजगारी, भर्ती घोटाले और सिस्टम में भ्रष्टाचार इन युवाओं के लिए प्रमुख मुद्दे बन गए।

पिछले चुनावों से तुलना करें तो युवाओं की हिस्सेदारी लगातार बढ़ी। 2011 में यह 20-22ब थी, जो 2021 में बढ़कर 24-25ब और 2026 में 22-26ब के बीच पहुंच गई है। भले ही संख्या बहुत बड़ी न हो, लेकिन चुनाव परिणाम बदलने लायक असर जरूर डाला है। पूरे बंगाल में युवाओं, खासकर शहरी इलाकों में, यह मुद्दा सबसे बड़ा बनकर उभरा। शिक्षक भर्ती घोटाले से जुड़े 26 हजार नियुक्तियां रद्द होने के फैसले के बाद युवाओं में गुस्सा और बढ़ा। लंबे समय तक चले आंदोलन ने सरकार के खिलाफ माहौल तैयार किया। चुनावी समीकरणों में बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के मुद्दों का असर सीमित नहीं रहा।

4- हिंसा-मुक्त और उच्च मतदान वाला चुनाव

बंगाल के चुनावों का इतिहास हिंसा से भरा रहा है, लेकिन इस बार अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण मतदान ने चुनावी परिणामों को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। चुनाव आयोग द्वारा भारी संख्या में केंद्रीय बलों की तैनाती, संवेदनशील बूथों की पहचान और प्रशासनिक अधिकारियों के व्यापक

तबादलों ने माहौल बदला। इसका असर दो स्तरों पर दिखा-

सुरक्षाबलों की भारी तैनाती के चलते वह मतदाता भी बाहर निकल कर आए सत्ता विरोधी होने के चलते मतदान नहीं करने आते थे, यानी साइलेंट वोटर इस बार निर्णायक बना।

सुरक्षाबलों की भारी मौजूदगी के चलते रिकॉर्ड स्तर का मतदान हुआ, जिसने सत्ता विरोधी वोट को वास्तविक वोट में बदला दिया।

5- भाजपा ने गलतियों से सबक लिया

2021 और 2026 के जंग में भाजपा की रणनीति का आंकलन करें तो काफी कुछ बदला हुआ नजर आएगा। ममता ने अपने जुबानी अंदाज से भाजपा को घेरे में रखने का प्रयास किया। लेकिन इस बार भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में ज्यादा समय या लोकल नेताओं को आगे की राजनीतिक रणनीति बनाने में ज्यादा भूमिका दी गई है। साथ ही सीमा सुरक्षा व बांग्ला अस्मिता पर लगातार हमला जारी रखा।

6- बंगाल में जमे रहे अमित शाह

भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले गृह मंत्री अमित शाह ने इस बार चुनावों में बंगाल में काफी लंबा समय गुजारा। वह आखिरी समय में बंगाल में करीब दो हफ्तों तक रहे और उन्होंने दो दर्जन से अधिक चुनावी रैलियां की। एक और जहां वह अपने भाषणों में ममता सरकार पर तीखा प्रहार करते दिखे, तो वहीं दूसरी ओर वह पदों के पीछे चुनावी की रणनीतियों की तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाते रहे। जिसका असर अब चुनाव के परिणामों पर दिखा। चुनाव के अंतिम दौर में अमित शाह ने नारा दिया था कि अंग, बंग और कलिंग तीनों में भाजपा की सरकार बनेगी।

7- बंगाल में सरकारी कर्मचारियों की नाराजगी

राज्य में टीएमसी की हार का एक बड़ा कारण सरकारी कर्मचारी भी माने जा रहे हैं। जो ममता सरकार से नाराज थे। राज्य कर्मचारियों के अभी छठे वेतन आयोग के हिसाब से वेतन दिया जा रहा है। कर्मचारी काफी लंबे समय से सातवें वेतन आयोग को लागू करने की मांग कर रहे हैं। जिसे बंगाल सरकार की ओर से अभी तक लागू नहीं किया गया है। जहां देश भर में अभी आठवें वेतन आयोग को लागू करने की बात चल रही है, वहीं बंगाल में कर्मचारियों लगातार सातवें वेतन आयोग को लागू करने की मांग कर रहे थे।

पुराण दिग्दर्शन

सन्देहाभासनिकारणाध्यायः (नौवां अध्याय)

(गतांक से आगे...)

जब शिष्य को ज्ञान पैदा हो जाता है तब उसको विद्या की आवश्यकता नहीं रहती अतएव वह विद्या फिर गुरु के पास चली जाती है। यह चन्द्र तारा की कथा का आध्या-त्मिक भाव है ।

ऐतिहासिक समन्वय

हम शैलीवर्णनाध्याय में पुराण शैली की विशेषता का वर्णन करते हुवे यह कह श्रापे हैं, कि पुराणों में बहुत से ऐसे संदर्भ पाये जाते हैं कि जिनमें ऐतिहासिक सामग्री के साथ साथ अनेक आध्यात्मिक एवं

वैज्ञानिक तत्त्वों को ऐसा विर्मिश्रित कर डाला है कि जिनका पृथक्करण किये बिना विशुद्ध ऐतिहासिक तथ्यों को ढूँढ निकालना सर्वसाधारण का काम नहीं है, तदनुसार यह आख्यान भी एक सीमा तक मानव इतिहास से सम्बन्ध रखता है।

परन्तु श्रीमद्भागवत निर्दिष्ट इस आख्यान के उपसहारात्मक शब्दों पर गंभीर विचार करने से यह

स्पष्ट हो जाता है कि तारा अपहरण वाली घटना तो खगोल विषयक %बुध ग्रह% से ही संबन्ध रखती है--अर्थात् - इस घटना का मानव-इतिहास से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, जैसा कि -

समरस्तारकामयः ।

(श्रीमद्भागवत 6 । 14 । 17)

-आदि शब्दों से व्यक्त होता है। इसमें ऐतिहासिक

तथ्य तो केवल एतावन्मात्र ज्ञान पड़ता है, कि ब्रह्मा के पौत्र चन्द्रदेव का बेटा बुध हुवा था जो कि वर्तमान चन्द्रवंशी क्षत्रियों का आदिपुरुष कहा जा सकता है। हमारे विचार में उक्त आख्यान का इससे अधिक ऐतिहा-सिक मूल्य नहीं आँका जा सकता ।

बृहस्पति और ममता

पुराणों पर एक यह भी श्राक्षेप किया जाया करता है कि उन में बृहस्पति का ममता से बलात्कार घटना XXXX लिखा है।

क्रमशः ...



दिलीप कुमार पाठक

शहर की भागती भीड़ में अगर आप किसी चौराहे पर खड़े होकर गौर करें, तो आपको हर पांचवें-छठे बच्चे के कंधे पर लटके स्कूल बैग के किनारे से एक प्लास्टिक का इन्हेलर झाँकता मिल जाएगा। यह आज की वह कड़वी हकीकत है जिसे हम विकास की चकाचौंध में अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। हमने आलोशान हाईवे और चमकते एक्सप्रेस-वे तो बना लिए, हाथ में 5जी मोबाइल भी थाम लिया, लेकिन उसी हाथ में हमारे बच्चों के लिए नेबुलाइजर की पाइपें भी थमा दीं। हम विकास की ऐसी दौड़ में शामिल हो गए हैं जहाँ बैंक बैलेंस तो बढ़ रहा है, लेकिन फेफड़ों की उम्र घट रही है। आज विश्व अस्थमा दिवस पर जब दुनिया इलाज की पहुंच की बात कर रही



है, तो हमें यह पूछना होगा कि क्या हम वाकई बीमारी का इलाज ढूँढ रहे हैं या उस जड़ को ही खाद-पानी दे रहे हैं जो इस बीमारी को पैदा कर रही है?अस्थमा अब केवल जेनेटिक या पुरानी बीमारी नहीं रह गई है। यह विशुद्ध रूप से एक इकोलॉजिकल क्राइम यानी पर्यावरण के खिलाफ किए गए अपराध का नतीजा है। भारत की हवा में जो जहर घुल चुका है, वह सीधे हमारे फेफड़ों को नुकसान पहुंचा रहा है।

प्रदूषण की बात चलते ही हमारी सुई अक्सर गाड़ियों के धुएँ पर टिक जाती है,

लेकिन हम उस मौसमी कहर को कैसे भूल सकते हैं जो उत्तर भारत के एक बड़े हिस्से का दम घोट देता है? खेतों में जलती पारली ने अस्थमा के संकेत को एक भयावह मोड़ दे दिया है। जब किसान भाई मजबूरन खेतों में आग लगाते हैं, तो वह काला धुआँ सरहदों को नहीं पहचानता। वह धुआँ स्मॉग बनकर हमारे घरों के ड्राइंग रूम तक घुस आता है, और तब सांस के मरीजों के लिए हर एक पल मौत से लड़ने जैसा होता है। विडंबना देखिए कि जिस मिट्टी से हमें अन्न मिलता है, उसी मिट्टी के ऊपर जलती आग हमारे मासूमों के फेफड़ों को झुलसा रही है। अगर आंकड़े देखें तो भारत में करीब 3 करोड़ से ज्यादा लोग अस्थमा से जूझ रहे हैं। सबसे भयावह तथ्य यह है कि दुनिया भर में अस्थमा से होने वाली मौतों में लगभग 64 प्रतिशत मौतें अकेले भारत में होती हैं। भारत में अस्थमा

मरीजों की तादाद उतनी बड़ी समस्या नहीं है, जितनी कि उनसे होने वाली मौतों का आंकड़ा, जो दुनिया में सबसे ज्यादा है।

यह आंकड़ा डराने वाला कम और शर्मिंदा करने वाला ज्यादा है। यह बताता है कि हमारे यहां या तो बीमारी की पहचान बहुत देर से होती है, या फिर इलाज इतना महंगा और जटिल है कि आम आदमी की पहुंच से बाहर है। अस्थमा के साथ सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि इसके साथ एक सामाजिक कलंक जुड़ा है। आज भी कई माता-पिता यह स्वीकार करने को तैयार नहीं होते कि उनके बच्चे को दमा है। उन्हें लगता है कि इन्हेलर की लत लग जाएगी। जबकि मेडिकल साइंस कहता है कि इन्हेलर ही सबसे सटीक इलाज है क्योंकि यह सीधे प्रभावित नली पर काम करता है। दवाइयों की गोलियायें पूरे शरीर में घूमकर असर करती हैं।

धर्म शासित ईरान की सामरिक-आक्रामक तैयारी

कमलेश पांडे

भारत के निकटम पड़ोसी देश ईरान की सामरिक और आक्रामक तैयारी पूरी भारत-इजरायल समेत पूरी दुनिया के लिए नसीहत बन गई है, क्योंकि उसने सीमित संसाधनों और भारी पश्चिमी प्रतिबंधों के बावजूद असममित युद्ध की ऐसी क्षमता विकसित कर ली, जिसने अमेरिका, इजराइल और पश्चिमी सैन्य गठबंधनों को भी नई रणनीति बनाने और उससे आगे की सोचने पर मजबूर कर दिया है। यदि समय रहते इसकी काट विकसित नहीं की गई, तो अरब देशों पर अमेरिका के बाद चीन की पकड़ मजबूत होगी, क्योंकि उसके साथ ईरान का सहयोगी रूस भी खड़ा है।

वहीं, इस्लामिक मुल्क के नाम पर मुस्लिम देशों का अंदरूनी झुकाव भी उसकी ओर है, जिससे रूसी मित्रता और चीनी छल की चक्री में भारत के पिप्पने के आसार प्रबल हैं। अनुभव बताता है कि ईरान अपने पड़ोसी देशों पाकिस्तान और अफगानिस्तान पर ज्यादा भरोसा करता है और इस्लामिक नाटो का पक्षधर भी है, इसलिए ईरान के मामले में भारत की जरा सी रणनीतिक लापरवाही उसे चीनी चक्रव्यूह में फिरे अभिमन्यु वाली कर देगी, क्योंकि भारत की हिन्दू विरोधी मुस्लिम राजनीति के आर्थिक स्रोत भी इस्लामिक मुल्कों से ही जुड़े बताए जाते हैं।

पहले ईरान से भारत-इजरायल समेत शेष दुनिया को मिलने वाली प्रमुख सामरिक सीखें निम्नलिखित हैं— पहला, आत्मनिर्भर सैन्य उत्पादन सबसे बड़ी ताकत है क्योंकि ईरान ने दशकों के प्रतिबंधों के बावजूद अपने मिसाइल, ड्रोन और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध तंत्र को घरेलू स्तर पर विकसित किया। आज उसके पास मध्य-पूर्व का सबसे बड़ा बैलिस्टिक मिसाइल भंडार माना जाता है। चूंकि वहां के लोग ज्यादा पढ़े लिखे होते हैं और ईरान ने लोकतंत्र की बजाय समानांतर कट्टर धार्मिक तंत्र विकसित कर लिया, जिससे भारत को अवश्य सोचने की जरूरत है। क्योंकि ईरान की इस नीति का संदेश स्पष्ट है- जो देश रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भर होगा, वही लंबे



संघर्ष में टिकेगा।

दूसरा, ड्रोन युद्ध ने युद्ध की परिभाषा ही बदल दी है, क्योंकि ईरान ने कम लागत वाले ड्रोन को रणनीतिक हथियार बना दिया। उसने दिखाया कि हजारों करोड़ की एयर डिफेंस प्रणाली को सस्ते ड्रोन झुंड से भी चुनौती दी जा सकती है। इसलिए आज अमेरिका तक स्वीकार कर रहा है कि महंगे इंटरसेप्टर मिसाइलों के मुकाबले सस्ते ड्रोन Cost Imbalance पैदा कर रहे हैं।

तीसरा, युद्ध केवल हथियार नहीं, धैर्य से जीता जाता है, यही बात ईरान ने दुनिया को सिखलाया है। जिस तरह से उसने अमेरिका-इजरायल के यौद्धिक गुरूर को तोड़ा है, वह शोध का विषय है, क्योंकि रूस-चीन के नैतिक मदद से उसने यह सफलता हासिल की है। ईरान ने प्रत्यक्ष युद्ध से अधिक लंबी थकाऊ लड़ाई की रणनीति अपनाई। उसका उद्देश्य तत्काल जीत नहीं, बल्कि विरोधी की आर्थिक, सैन्य और मनोवैज्ञानिक क्षमता को थकाना रहा। यह आधुनिक युद्ध की नई वास्तविकता है—

हर युद्ध Blitzkrieg नहीं होता; कई युद्ध विरोधी को थकाकर जीते जाते हैं।

चौथा, कमांड सिस्टम का बैकअप अत्यंत जरूरी होता है, ताकि भारी हमलों और शीर्ष कमांडरों के मारे जाने के बावजूद ईरान का सैन्य कमांड ढांचा पूरी तरह ध्वस्त नहीं हुआ। उसने पहले से वैकल्पिक

नेतृत्व और विकेंद्रीकृत कमांड संरचना तैयार कर रखी थी। यह हर राष्ट्र के लिए बड़ा संदेश है कि—युद्ध में नेतृत्व का विकल्प पहले से तैयार होना चाहिए।

पांचवां, मिसाइल, ड्रोन और प्रॉक्सी का संयुक्त मॉडल ही ईरानी सफलता का सूत्र है, क्योंकि ईरान ने केवल अपनी सेना पर निर्भर रहने के बजाय क्षेत्रीय नेटवर्क तैयार किया—हिजबुल्लाह, हूती और अन्य सहयोगी समूहों के माध्यम से उसने बहु-स्तरीय दबाव बनाया। यह Hybrid Warfare का आधुनिक मॉडल है।

छठा, समुद्री मार्गों पर नियंत्रण की शक्ति विकसित करके आक्रमणकारियों को तोड़ना ईरानी दूरदर्शिता का ही तकाजा है, क्योंकि होर्मुज जलडमरूमध्य पर ईरान का प्रभाव पूरी दुनिया की ऊर्जा सुरक्षा को प्रभावित करता है। इसी कारण अमेरिका और पश्चिम लगातार उस क्षेत्र में सैन्य उपस्थिति बढ़ाते रहे हैं। इससे यह सिद्ध होता है—भूगोल भी उतना ही बड़ा हथियार है जितना मिसाइल।

सातवां, तकनीकी युद्ध में सस्ता हथियार भी निर्णायक होता है, यह ईरान ने साबित कर दिया है। ईरान ने दिखाया कि हर युद्ध अत्याधुनिक स्टीलथ फाइटर से नहीं जीता जाता। कभी-कभी सस्ती, तेज और बड़ी संख्या में उपलब्ध तकनीक अधिक प्रभावी होती है।

निष्कर्षतः ईरान की तैयारी गैर इस्लामिक दुनिया को यह सिखाती है कि आधुनिक युद्ध केवल परमाणु बम या महंगे लड़ाकू विमानों से नहीं लड़े जाते। आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन, ड्रोन तकनीक, मिसाइल क्षमता, साइबर-रणनीति, वैकल्पिक नेतृत्व और मनोवैज्ञानिक युद्ध—ये सब मिलकर किसी राष्ट्र को सामरिक शक्ति बनाते हैं। इसीलिए आज अमेरिका, इजराइल, रूस, चीन और भारत समेत दुनिया की बड़ी सैन्य शक्तियां भी ईरानी मॉडल का गंभीर अध्ययन कर रही हैं।

आज का इतिहास

1835 ब्रायुलियो कैरिलो को कोस्टा रिका राज्य के प्रमुख के रूप में शपथ दिलाई गई।

1847 वास्तुकला एसोसिएशन स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर की स्थापना लंदन में की गई।

1860 इतालवी जनरल ग्यूसेप गैरीबाल्डी के नेतृत्व में, हजार के स्वेच्छिक अभियान ने जेनोआ से दो सिसिली के साम्राज्य को जीतने के अभियान पर रवाना किया।

1864 वर्जीनिया में अमेरिकी नागरिक युद्ध-संघ के लेफ्टिनेंट जनरल उलीसेस एस। ग्रांट के ओवरलैंड अभियान की शुरुआत स्पोर्ट्सलेटन काउंटी में जंगल की लड़ाई से हुई।

1891 न्यूयॉर्क सिटी के कार्नेगी हॉल (आंतरिक चित्र), बाईफिलंथ्रोपिस्ट एंड्यू कानेगी द्वारा निर्मित, आधिकारिक तौर पर रूसी संगीतकार प्योत्र इलच त्चिकोवस्की द्वारा संगीत कार्यक्रम के साथ खोला गया।

1902 राष्ट्रमंडल लोक सेवा अधिनियम ऑस्ट्रेलिया की सार्वजनिक सेवा बना।

1904 बोस्टन अमेरिकियों के पिचर साइ यंग ने पेशेवर बेसबॉल के आधुनिक युग में पहला खेल फेंक दिया।

1912 बोल्शेविक अखबार प्रवीडा को पहली बार रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में प्रकाशित किया गया था।

1925 अफ्रीकी 5 मई, 1925 को दक्षिण अफ्रीका में आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित किया गया था। 1910 से 1925 तक पिछले वर्षों के दौरान डच और अंग्रेजी दक्षिण अफ्रीका की पहली आधिकारिक भाषा थी।

1932 28 जनवरी की घटना या पहली शंघाई घटना 1932 में चीन गणराज्य और जापान के साम्राज्य के बीच संघर्ष था, जिसे 5 मई को दोनों देशों द्वारा हस्ताक्षर किए गए शंघाई युद्धविराम समझौते से रोक दिया गया था।

1936 इटली के सैनिकों ने अदीस आबाबा पर कब्जा किया।

1938 स्पेन के वेटिकन शहर में फ्रांसिस्को फ्रेंको की सरकार को मान्यता मिली।

1940 द्वितीय विश्व युद्ध-हेग्राफोर्ट में 250 नावों के स्वयंसेवकों के एक दल ने आखिरकार 25 दिनों की घेराबंदी के बाद एक बहुत ही बेहतर नाजी सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

1949 यूरोप की परिषद को 5 मई, 1949 को लंदन की संधि द्वारा शामिल किया गया था जिसमें बेल्जियम, डेनमार्क, फ्रांस, आयरलैंड, इटली, लक्समबर्ग, नीदरलैंड, नर्वे, स्वीडन और यूनाइटेड किंगडम शामिल हैं। यूरोपीय देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए संगठन एक स्वतंत्र संस्था है।

‘ऑपरेशन सिंदूर’ के एक साल पूरे, अब पूर्वी मोर्चे पर ध्यान देने की जरूरत

शेखर गुप्ता

अगले सप्ताह ऑपरेशन सिंदूर की पहली वर्षगांठ होगी। ऐसे में हमें उन 87 घंटों के दौरान सैन्य प्रदर्शन की प्रेक कहानियों की भरमार के लिए तैयार रहना चाहिए। परंतु हमें इसे रोकना चाहिए, और इसके पीछे कारण है। मेरा मानना है कि यह राष्ट्र हित में होगा कि हम अतीत को लेकर यूू जश्न के मिजाज में न रहें। इसके बजाय हमें भविष्य के युद्धों के बारे में सोचना चाहिए।

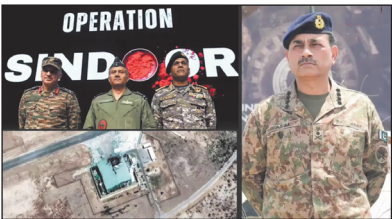
हमें अपने भू-भाग पर पश्चिम से अब पूर्व की ओर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। अभी पूर्वी मोर्चा शांत दिखाई देता है, लेकिन यह बदलेगा। याद कीजिए कि फील्ड मार्शल आसिम मुनिर ने 9 अगस्त, 2025 को टैम्पा, फ्लोरिडा में दिए अपने भाषण में डींग मारते हुए क्या कहा था। उन्होंने कहा था कि अमली बार पाकिस्तान युद्ध की शुरुआत पूर्व से करेगा, क्योंकि वही ‘भारत ने अपने सबसे मूल्यवान संसाधन स्थापित किए हैं।’

अब नक्शा खोलिए और नजर दौड़ाइए। हमारे 3,416 किलोमीटर लंबे पूर्वी समुद्री तट पर आप क्या देखते हैं? यह बंगाल की खाड़ी के ऊपर बांग्लादेश का छोटा सा 600 किलोमीटर का तट है, उसके बाद म्यांमार का 2,227 किलोमीटर लंबा तट, फिर थाईलैंड,

जिसके दक्षिण में अंडमान सागर मलक्का स्ट्रेट के पार प्रशांत महासागर तक ले जाता है। बांग्लादेश और खासकर म्यांमार चीन के दबाव में आ सकता है। और अगर कभी थाईलैंड ने क्रा की संकरी 50 किलोमीटर की भूमि पट्टी पर नहर खोदने के अपने इरादे को अमली जामा पहनाने का फैसला किया तब जहाजों के प्रशांत महासागर से अंडमान सागर में पहुंचने का समय तीन दिन घट जाएगा।

इसके अलावा, यह सामरिक दृष्टि से एक दबाव क्षेत्र के रूप में मलक्का स्ट्रेट की हैसियत को कमजोर कर देगा। यह अक्टूबर 2023 में उजागर हुआ था, जब तत्कालीन थाई प्रधानमंत्री श्रेल्य थाविसिन ने बीआरआई फोरम में एक डूडल में इसका उल्लेख किया था और वह पेइचिंग में कैमरों में कैद हो गया। उस डूडल में ठीक उस संकरे स्थल पर एक नहर को दर्शाया गया था। यदि यह प्रोजेक्ट कभी हकीकत बनता है, तो इससे भारत का व्यस्त पूर्वी समुद्री तट, बड़े महानगर और औद्योगिक क्षेत्र चीन के सामने उजागर हो जाएंगे।

प्रशांत महासागर खतरनाक रूप से भारत के करीब आ जाएगा। ऐतिहासिक रूप से और सहज रूप से, भारत ने पश्चिम और उत्तर से चीन और पाकिस्तान के खतरे देखे हैं। पूर्व को अपेक्षाकृत कम ध्यान मिला है। क्राड की बहुत चर्चा हुई है, और मलक्का स्ट्रेट पर भारत की



पकड़ की भी। लेकिन मानसिक रूप से, भारत ने पूर्व को अपेक्षाकृत सौम्य दृष्टि से देखा है। इसका परिणाम यह है कि हमारी अधिकांश प्रमुख परिचालन संपत्तियां यानी सेना और वायु सेना उत्तर और पश्चिम की ओर केंद्रित हैं। यहां तक कि नौ सेना भी पश्चिम (पाकिस्तान) पर केंद्रित है। यह ध्यान उचित है, लेकिन अब पूर्व में मौजूद कमजोरी को दूर करना आवश्यक है।

प्रकृति और भूगोल ने भारत को अपनी रक्षा के लिए जरूरी संसाधन दिए हैं। पूर्व में अंडमान और निकोबार द्वीप को भगवान ने कभी न डूबने वाले विमान वाहक पोतों की तरह बनाया है। वहां बड़े पोत और पनडुब्बी भी संचालित हो सकते हैं और लड़ाकू तथा टोही विमान भी। वहां से भारत पूरी बंगाल की खाड़ी, अंडमान सागर और उसके आगे तक नजर रख सकता है।

यही बात ग्रेट निकोबार द्वीप को एक अद्वुत सामरिक संपत्ति बनाती है। राहुल गांधी

ने पिछले दिनों वहां जाकर एक बहुउद्देश्यीय टाउनशिप सह ट्रांसशिपमेंट बंदरगाह का विरोध किया है। वह दरअसल एक बड़ा सैन्य अड्डा बनाने की योजना है जो भारत द्वारा चीन को मलक्का स्ट्रेट में रोकने की संभावना के गलत आकलन में उलझ गई है।

यह संभव तो है लेकिन बहुत अधिक यथार्थवादी नहीं है। यह स्ट्रेट शक्तिशाली संप्रभु राष्ट्रों इंडोनेशिया, मलेशिया और सिंगापुर के बीच स्थित है। साथ ही, इसे अवरुद्ध करने के लिए भारत को ईरान की तरह लापरवाह होना पड़ेगा, जैसा कि उसने होम्स में किया, क्योंकि इससे मित्र और शत्रु दोनों प्रभावित होंगे। इनमें जापान, दक्षिण कोरिया, रूस भी शामिल हैं।

भारत के इतना जोखिम उठाने के लिए हालात वास्तव में बेहद निराशाजनक और गंभीर होने चाहिए। इसलिए यह कहीं अधिक आसान है कि द्वीपीय क्षेत्रों खासकर ग्रेट निकोबार को भारत की अग्रिम रक्षात्मक ढाल के रूप में देखा जाए। यदि इन्हें सावधानी और धैर्यपूर्वक विकसित किया जाए तो ये पूर्वी भारत की रक्षा के लिए वही काम कर सकते हैं जो उत्तर में हिमालय करता है।

अगले 10–15 वर्षों में कौन-सा परिदृश्य अधिक संभावित है? भारत महासागरों में सक्रिय रूप से चीन की ओर बढ़ेगा, या चीन भारत को धमकाने के लिए भीतर आएगा? यह

प्रत्यक्ष हो सकता है, या ध्यान भटकाने के रूप में यदि भारत पाकिस्तान के साथ बड़े संघर्ष में उलझा हो। यदि हम आपको उस विस्तारित नक्शे पर वापस ले जाएं तो आप कुछ छोटे-छोटे बिंदु देख सकते हैं जो लैंडफॉल द्वीप से केवल 20 किलोमीटर दूर हैं, जो अंडमान द्वीपसमूह का सबसे उत्तरी द्वीप है।

अंडमान की शुरुआत से बहुत दूर, यहां म्यांमार का ग्रेट कोको द्वीप स्थित है। यह केवल 14.57 वर्ग किलोमीटर का है लेकिन इसमें पहले से ही 7,500 फुट लंबा हवाई पट्टी है, जो ग्रेट निकोबार में हमारे दृष्टि द्वारा बनाई पट्टी से भी लंबी है। कोको द्वीप पर चीनी यात्राएं हुई हैं (इसमें चार और छोटे द्वीप हैं जिन्हें लिटिल कोको श्रृंखला कहा जाता है) और जो कोई भी यहां चीनी उपस्थिति की संभावना को नकारता है, म्यांमार में व्याप्त अराजकता को देखते हुए इतिहास उसे माफ नहीं करेगा। क्राड की उत्साह भरी चर्चाओं ने हमारी रणनीतिक दृष्टि को धुंधला कर दिया है।

भारत के लिए यह यथार्थवादी सोच नहीं है कि हम अमेरिका और उसके सहयोगियों की ओर से चीन के खिलाफ मलक्का स्ट्रेट को अवरुद्ध करें। तात्कालिक आवश्यकता यह है कि हम पूर्व में अपनी समुद्री रक्षा को मजबूत करें। इसीलिए द्वीपों का तत्काल सैन्यीकरण जरूरी है। भारत अगर इस सामरिक उद्धार का

लाभ नहीं उठाता है तो गलती करेगा।

याद रहे कि मलक्का स्ट्रेट से गुजरने वाले हर जहाज को ‘सिक्स डिग्री चैनल’ से गुजरना ही पड़ता है, जो भारत के ‘विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र’ में पड़ता है। इन द्वीपों की पूरी अहमियत को समझने के लिए हमें भविष्य में आने वाले खतरों का अनुमान लगाना होगा और अतीत के मसलों पर युद्ध लड़ने, खासकर 87 घंटे की झड़प जैसी उलझनों से बचना होगा।

अंत में हम आसिम मुनिर पर लौटते हैं। उनके बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि वह बड़बोले हैं। अगर उनके पास जियाउल हक जैसी कुटिल मुस्कान और शातिर हो?शियारी होती, तो वह और भी बड़ी परेशानी होते। जिया चुपचाप पीठ में छुरा घोंपते थे, जबकि मुनिर डींगें हाकते हैं। यही कारण है कि जब हमारा ध्यान पूर्व की ओर बढ़ता है, तो हमें दो प्रश्नों पर बहस करनी होगी। पहला, वह किस चीज को ‘सबसे मूल्यवान’ कहते हैं। और दूसरा उन संपत्तियों को निशाना बनाने के लिए उनके पास कौन-से साधन होंगे।

मेरे पास कुछ अनुमान हो सकते हैं, लेकिन मैं किसी को केवल एक स्तंभ में विचार नहीं देना चाहता। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि वह सिलिगुड़ी की बात नहीं कर रहे हैं, जैसा कि कई लोगों ने सहज रूप से मान लिया था।

5 राज्यों में किसका होगा राजतिलक

सौरभ वार्ष्णेय

लोकतंत्र में चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे जनभावनाओं, अपेक्षाओं और राजनीतिक दिशा का स्पष्ट संकेत भी देते हैं। देश के पाँच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों को इसी दृष्टि से देखा जा रहा है। यह चुनाव न केवल क्षेत्रीय राजनीति का विषय तय करेंगे, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति की धारा को भी प्रभावित करेंगे। इन चुनावों में मुख्य मुकाबला सत्तारूढ़ दलों और विपक्षी गठबंधनों के बीच है। एक ओर जहाँ सत्ताधारी दल अपनी उपलब्धियों—विकास, कल्याणकारी योजनाओं और स्थिर शासन—को जनता के सामने रख रहे हैं, वहीं विपक्ष महंगाई, बेरोजगारी और सामाजिक असंतोष जैसे मुद्दों को लेकर सरकार को घेरने में जुटा है। ऐसे में मतदाता के सामने विकल्प स्पष्ट हैं, लेकिन निर्णय आसान नहीं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इन चुनावों में स्थानीय मुद्दे निर्णायक भूमिका निभाएंगे। हर राज्य की अपनी सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ हैं, जिनके आधार पर वोटिंग पैटर्न अलग-अलग हो सकता है। कहीं जातीय समीकरण हावी होंगे, तो कहीं विकास का मुद्दा केंद्र में रहेगा। यही कारण है कि एक ही राजनीतिक दल का प्रदर्शन सभी राज्यों में समान नहीं रहने की संभावना है। इन चुनावों की एक और खासियत यह है कि क्षेत्रीय दलों की भूमिका काफी अहम हो गई है। कई राज्यों में वे किंगमेकर की स्थिति में हैं, जो यह तय कर सकते हैं कि सत्ता किसके हाथ में जाएगी। इससे गठबंधन राजनीति को भी नई मजबूती मिल सकती है।

हालाँकि, इन चुनावों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू मतदाता की भूमिका है। लोकतंत्र की असली ताकत जनता के हाथ में होती है, और वही तय करती है कि किसे राजतिलक मिले और किसे विपक्ष में बैठना पड़े। इसलिए यह आवश्यक है कि मतदाता जाति, धर्म और भावनात्मक नारों से ऊपर उठकर विकास, सुशासन और पारदर्शिता के आधार पर अपना निर्णय लें।

पाँच राज्यों के ये चुनाव केवल सरकार बनाने का गणित नहीं हैं, बल्कि यह लोकतंत्र की परिणकता की परीक्षा भी हैं। परिणाम चाहे जो भी हों, यह स्पष्ट है कि जनता का संदेश ही सबसे बड़ा निर्णायक होगा—और वही तय करेगा कि किसके सिर सजेगा सत्ता का ताज।

चुनावी लोकतंत्र में एक्जिट पोल अब सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं रह गए हैं, बल्कि वे जनमत की तत्काल

झलक पेश करने का दावा करते हैं। जैसे ही मतदान समाप्त होता है, टीवी स्टूडियो से लेकर सोशल मीडिया तक, एक्जिट पोल के आंकड़े माहौल बना देते हैं—कहीं उत्साह, कहीं चिंता और कहीं संशय। ऐसे में बड़ा सवाल यही है कि क्या 5 राज्यों के ये एक्जिट पोल सच साबित होंगे या फिर एक बार फिर हवा साबित होंगे?सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि एक्जिट पोल वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होते हुए भी पूर्ण सत्य नहीं होते। ये सीमित सैंपल, मतदाताओं की ईमानदारी और स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहां हर राज्य की सामाजिक, जातीय और राजनीतिक संरचना अलग है, वहां एक समान सटीकता की उम्मीद करना अव्यावहारिक है। पिछले चुनावों का इतिहास भी मिश्रित रहा है। कई बार एक्जिट पोल ने चौंकाने वाली सटीकता दिखाई है, तो कई बार वे पूरी तरह गलत साबित हुए हैं। खासकर राज्य चुनावों में, जहां स्थानीय मुद्दे, उम्मीदवार की छवि और क्षेत्रीय समीकरण निर्णायक भूमिका निभाते हैं, वहां एक्जिट पोल की सीमाएं और स्पष्ट हो जाती हैं।

इन 5 राज्यों के चुनावों में भी तस्वीर जटिल है। कहीं सत्ता विरोधी लहर की चर्चा है, तो कहीं सरकार की योजनाओं के प्रभाव की। जातीय समीकरण, क्षेत्रीय दलों की ताकत और राष्ट्रीय मुद्दों का प्रभाव—ये सभी कारक परिणामों को अप्रत्याशित बना सकते हैं। ऐसे में एक्जिट पोल का सीधा-सीधा परिणामों में बदल जाना आसान नहीं है।

मीडिया की भूमिका भी यहां महत्वपूर्ण हो जाती है। कई बार एक्जिट पोल को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है मानो वही अंतिम परिणाम हों, जिससे जनमानस में भ्रम की स्थिति बनती है। इससे न सिर्फ मतदाताओं की धारणा प्रभावित होती है, बल्कि राजनीतिक दलों के भीतर भी अनावश्यक प्रतिक्रिया देखने को मिलती है। लोकतंत्र में अंतिम सत्य मतगणना के दिन ही सामने आता है। एक्जिट पोल संकेत दे सकते हैं, लेकिन फैसला नहीं सुना सकते। इसलिए इन आंकड़ों को उसुकता के साथ देखना ठीक है, पर उन्हें अंतिम सच मान लेना जल्दबाजी होगी। 5 राज्यों के चुनाव परिणाम यह तय करेंगे कि इस बार एक्जिट पोल ने हवा बनाई है या हकीकत दिखाई है। लेकिन एक बात तय है—भारतीय मतदाता अक्सर आखिरी क्षण में भी ऐसा निर्णय लेता है, जो सभी अनुमानों को चौंका देता है। यही लोकतंत्र की असली खूबसूरती है।

एग्जिट पोल पर केवल राजनीतिक प्रतिक्रियाओं के अनुसार मत न बनाएं

अतदीश कुमार

भारत में ओपिनियन पोल यानी चुनाव पूर्व सर्वेक्षण हो या एग्जिट पोल अर्थात मतदान के बाद का सर्वेक्षण, ऐसा कोई वर्ष नहीं, जब इस पर जबरदस्त विवाद तथा तू-तू, मैं-मैं न होती हो। जिसके पराजित होने की संभावना व्यक्त होती है वह इसका विरोध करता है। हालांकि विरोध सामान्य हो या तथ्यों के आधार पर प्रश्न उठाया जाए या कोई तार्किक आपत्ति हो तो समस्या नहीं। किंतु पिछले कुछ वर्षों से ऐसी सभी एजेंसियों और संस्थाओं को भाजपा द्वारा या सरकार द्वारा प्रायोजित बता कर उसकी साख को भी समाप्त करने का अभियान चलता है।

पश्चिम बंगाल के एग्जिट पोल पर तृणमूल कांग्रेस की प्रतिक्रियाएं देख लीजिए। हालांकि इनमें भी ज्यादातर एजेंसियों ने तृणमूल और भाजपा के मतों एवं सीटों में बहुत ज्यादा अंतर नहीं दिखाया। हां, ज्यादातर में भाजपा की विजय की प्रवृत्ति अवश्य दर्शाई गई है। इनमें अंतर इतने महीन हैं कि इन एग्जिट पोलों के आधार पर भी आप निश्चयात्मक नहीं मान सकते कि हां यही परिणाम आएगा। केवल एक एजेंसी टुडेज चाणक्य ने भाजपा को तृणमूल से मतों एवं सीटों दोनों में काफी आगे बताया है। तृणमूल कांग्रेस की शीर्ष नेत्री ममता बनर्जी से लेकर अभिषेक बनर्जी, उनके मंत्री, सांसद और यहां तक कि टी.वी. पर बैठने वाले प्रवक्ता व पैनलिस्ट एजेंसियों और चैनलों पर हमले कर रहे हैं।

ओपिनियन पोल और एग्जिट पोल पर राजनीतिक दलों तथा कुछ टिप्पणीकारों द्वारा उठाए जा रहे प्रश्नों से उनकी विश्वसनीयता को गहरा आघात लगा है। ऐसा माहौल बना, मानो सारे एग्जिट पोल आज तक गलत ही साबित हुए हैं। ऐसा सच नहीं। एग्जिट पोल का यह अर्थ नहीं कि वे जितनी सीटें बताते हैं वास्तव में उतनी ही आ सकती हैं या आनी चाहिए। एग्जिट पोल से हमें चुनाव परिणाम का भावी ट्रेंड यानी प्रवृत्ति या दिशा का आभास मिलता है। अनेक बार एग्जिट पोल लगभग परिणाम के आसपास भी रहे हैं। 2024 लोकसभा चुनाव परिणाम में एग्जिट पोलों के



द्वारा दिए गए आंकड़ों से परिणाम भिन्न आए। आवाज यहां तक उठी कि एग्जिट पोल को प्रतिबंधित कर देना चाहिए। लोकसभा चुनाव के साथ ही आंध्र प्रदेश और ओडिशा के ज्यादातर एग्जिट पोल लगभग सही साबित हुए। आंध्र में तेलुगू देशम के नेतृत्व में राजग तथा ओडिशा में भाजपा के लिए बहुमत का आंकड़ा दिया गया था और परिणाम वही आया। अधिकतर एग्जिट पोल 2024 लोकसभा चुनाव में मुख्यत् 3 राज्यों उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में विफल साबित हुए। अगर राज्यों के आंकड़े देखें तो उन्हें आप विफल नहीं कर सकते। 2014, 2019 लोकसभा चुनावों में एग्जिट पोल और परिणाम की दिशा एक रही।

ओपिनियन पोल और एग्जिट पोल वर्तमान चुनाव प्रणाली में मतदाताओं की मनस्थिति समझने का एक माध्यम है। ओपिनियन पोल में आप अलग-अलग क्षेत्र में जाते हैं, लोगों से बातें करते हैं और गणना करते हुए निष्कर्ष निकालते हैं। मुद्दों, उम्मीदवारों, नेताओं, उनके कार्यों, विकास आदि इतने प्रश्न होते हैं कि उनसे काफी कुछ धरातली वास्तविकता समझी जा सकती है। तब भी ओपिनियन पोल परिणाम चुनाव परिणाम की प्रवृत्ति से अलग हो सकते हैं। कारण, ये मतदान पूर्व होते हैं और चुनाव अभियानों से लेकर मतदान तक लोगों का मन बदल सकता है। किंतु एग्जिट पोल मतदान कर निकल रहे मतदाताओं के मत होते हैं। साफ है, इससे भावी परिणाम का ट्रेंड यानी दिशा का साफ पता चलना चाहिए। अगर नहीं, तो यह गंभीर पुनर्मथन का विषय होना चाहिए।

जयसिंह रावत

पश्चिम बंगाल की राजनीति आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जिसे भविष्य के इतिहासकार ‘महा-परिवर्तन’ की संज्ञा देंगे। 2026 के विधानसभा चुनावों के जो रझान और नतीजे सामने आ रहे हैं, वे स्पष्ट संकेत दे रहे हैं कि बंगाल में ‘‘भगवा’’ का परचम लहराना अब लगभग तय है। सात दशकों के लंबे वैचारिक वनवास के बाद, भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्मभूमि ने पहली बार उनके सपना को साकार करने जा रही है। लेकिन यह जीत जितनी भव्य दिख रही है, इसका विश्लेषण उतना ही गहरा और निष्पक्षता की मांग करता है।

इन चुनावों की शुरुआत से ही बंगाल का माहौल बेहद तनावपूर्ण रहा। एक ओर ममता बनर्जी का ‘अजेय’ माना जाने वाला संगठनात्मक ढांचा था, तो दूसरी ओर भाजपा की आक्रामक चुनाव मशीनें। हालांकि, चुनावी शुचिता पर इस बार भी गंभीर सवाल उठे। ठीक चुनाव से पूर्व 90 लाख से अधिक मतदाताओं को सूची से हटाना भी एक असाधारण घटना रही। इसलिए विपक्षी दलों ने चुनाव आयोग की भूमिका पर उंगली उठाने में देर नहीं की। मतदान के विभिन्न चरणों में हुई छिटपुट हिंसा, केंद्रीय बलों की तैनाती के बावजूद बूथों पर तनाव और आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के आरोपों ने आयोग की निष्पक्षता को संदेह के घेरे में रखा। आलोचकों का वर्क है कि आयोग ने कई संवेदनशील मोर्चों पर बैसी तत्परता नहीं दिखाई जैसी अपेक्षित थी। लेकिन इन सबके बीच, जनता का भारी संख्या में घर से निकलना इस बात का प्रमाण था कि बदलाव की छटपटाहट संस्थागत कमियों से कहीं अधिक बड़ी थी।

तृणमूल कांग्रेस की संभावित हार का विश्लेषण करते समय हमें सत्ता के अहंकार और जमीनी जुड़वा के टूटने को समझना होगा। 15 सालों के शासन के बाद ‘एंटी-इंकबेंसी’ या सत्ता विरोधी लहर का होना स्वाभाविक है, लेकिन टीएमसी के मामले में यह लहर ‘सिंडिकेट राज’ और भ्रष्टाचार के गहरे आरोपों से निर्मित हुई थी। शिक्षक भर्ती घोटाला, राशन वितरण में अनियमितताएं और संदेशवाली जैसी घटनाओं ने



ममता बनर्जी की ‘मां-माटी-मानुष’ की छवि को गहरा आघात पहुँचाया। टीएमसी की सबसे बड़ी कमजोरी उसका ‘कैटल-बलास’ संगठन बना, जहाँ स्थानीय नेताओं पर वसूली और हिंसा के आरोप लगे। जिस महिला वोट बैंक के भरोसे ममता बनर्जी राजनीति करती रही थीं, उस वर्ग में असुरक्षा की भावना ने संघ लगा दी। इसके अतिरिक्त, मुस्लिम मतों के प्रति कथित ‘‘तुष्टिकरण’’ की नीति ने बहुसंख्यक आबादी के एक बड़े वर्ग को भाजपा की ओर धकेल दिया, जिससे वोटों का ध्रुवीकरण टीएमसी के नियंत्रण से बाहर चला गया। एक बड़ा यक्ष प्रश्न यह है कि जिस प्रदेश ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसा महान नेतृत्व देश को दिया, उसने उनकी विचारधारा से इतने वर्षों तक दूरी क्यों बनाए रखी? इसके पीछे बंगाल का विशिष्ट सामाजिक-राजनीतिक ताना-बना है। आजादी के बाद, बंगाल विभाजन की त्रासदी से गुजर रहा था।

उस समय शरणार्थी समस्या और आर्थिक बदहाली ने बंगाल के मानस को ‘‘पहचान की राजनीति’’ के बजाय ‘‘वर्ग संघर्ष’’ की ओर मोड़ दिया। वामपंथ ने यहाँ बड़ी चतुराई से धर्म और राष्ट्रवाद के ऊपर ‘‘वर्गीय चेतना’’ को स्थापित कर दिया। डॉ. मुखर्जी की विचारधारा को ‘‘कुलीन’’ या ‘‘सांप्रदायिक’’ कहकर प्रचारित किया गया, जबकि बंगाल का बुद्धिजीवी वर्ग मार्क्सवाद के प्रभाव में था।दूसरा कारण यह रहा कि डॉ. मुखर्जी के असामयिक निधन के बाद बंगाल में दक्षिणपंथी विचारधारा के पास वैसा कोई कद्दावर स्थानीय चेहरा नहीं रहा जो बंगाली अस्मिता और राष्ट्रवाद को एक साथ जोड़ सके। बंगाल ने हमेशा ‘‘बंगाली गौरव’’ को प्राथमिकता दी, और भाजपा को लंबे समय तक एक

शुभेंदु ने बंगाल में भाजपा को अपने पैरों पर खड़ा करके दिखा दिया

नीरज कुमार दुवे

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव को लेकर एग्जिट पोल्स के अनुमानों ने राज्य की राजनीति को अत्यंत रोचक बना दिया है। विभिन्न सर्वेक्षणों में यह संकेत मिल रहे हैं कि भारतीय जनता पार्टी को इस बार प्रचंड बहुमत प्राप्त हो सकता है। इस राजनीतिक परिदृश्य के केंद्र में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी हैं, जिनकी भूमिका इस चुनाव में निर्णायक मानी जा रही है। भवानीपुर और नंदीग्राम जैसी महत्वपूर्ण सीटों पर उनकी उपस्थिति ने चुनाव को अत्यधिक दिलचस्प बना दिया है। शुभेंदु अधिकारी का नाम पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक प्रभावशाली और जमीनी नेता के रूप में स्थापित हो चुका है। उनका जन्म 15 दिसंबर 1970 को पूर्व मेदिनीपुर जिले के करकुली में हुआ था। वह वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री सिसिर कुमार अधिकारी के पुत्र हैं। बचपन से ही राजनीतिक माहौल में पले बढ़े शुभेंदु ने ग्रामीण राजनीति की बारीकियों को नजदीक से समझा, जिससे उनकी छवि एक भूमिपुत्र नेता के रूप में संजुत हुई। उनकी शिक्षा भी उनके व्यक्तित्व को मजबूत बनाती है। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कांथी हाई स्कूल से पूरी की। इसके बाद उन्होंने प्रभात कुमार कॉलेज से कला स्नातक की डिग्री प्राप्त की और फिर कोलकाता स्थित रवींद्र बाहरी विश्वविद्यालय से कला में पारास्नातक किया। साथ ही उन्होंने नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय से भी अध्ययन किया। राजनीतिक जीवन की शुरुआत उन्होंने 1995 में कांग्रेस के साथ की, जब वह कान्ही नगरपालिका के पार्षद चुने गए। वर्ष 2006 में वंश पहली बार विधानसभा पहुंचे। लेकिन उनकी असली पहचान नंदीग्राम आंदोलन के दौरान बनी, जब

उन्होंने भूमि अधिग्रहण के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया। इस आंदोलन ने राज्य की राजनीति को बदल दिया और ममता बनर्जी के सत्ता में आने का मार्ग प्रशस्त किया। बाद में वह तृणमूल कांग्रेस के प्रमुख रणनीतिकार बने और तमकुल से दो बार सांसद भी चुने गए। वर्ष 2016 से 2020 तक उन्होंने राज्य सरकार में परिवहन, सिंचाई और जल संसाधन जैसे महत्वपूर्ण विभाग संभाले। दिसंबर 2020 में उन्होंने वैचारिक मतभेदों का हवाला देते हुए भाजपा का दामन थाम लिया। 2021 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने नंदीग्राम सीट से ममता बनर्जी को 1956 मतों से हराकर इतिहास रच दिया। इसके बाद उन्हें विधानसभा में विपक्ष का नेता बनाया गया और वह भाजपा का प्रमुख चेहरा बनकर उभरे। 2026 के चुनाव में शुभेंदु अधिकारी ने नंदीग्राम के साथ-साथ भवानीपुर सीट से भी चुनाव लड़ा, जहां उनका सीधा मुकाबला ममता बनर्जी से है। एग्जिट पोल के अनुसार वह भवानीपुर में भी जीत दर्ज कर सकते हैं। यदि ऐसा होता है और भाजपा को बहुमत मिलता है, तो शुभेंदु अधिकारी का मुख्यमंत्री बनना लगभग तय माना जा रहा है। शुभेंदु अधिकारी की आर्थिक स्थिति भी अपेक्षाकृत सादगीपूर्ण है। 2026 के चुनावी हलफनामे के अनुसार उनकी कुल संपत्ति लगभग 85.87 लाख रुपये है। इसमें कुल संपत्ति लगभग 20.72 लाख रुपये और अचल संपत्ति लगभग 65.15 लाख रुपये है। उनकी आय का मुख्य स्रोत पारिवारिक संपत्ति है और उन पर कोई देनदारी नहीं है। हम आपको बता दें कि शुभेंदु अधिकारी का राजनीतिक प्रभाव विशेष रूप से जंगलमहल और मेदिनीपुर क्षेत्र में बेहद मजबूत है। इन क्षेत्रों में उनकी संगठन क्षमता और जनसमर्थन भाजपा के लिए महत्वपूर्ण आधार बन चुका है।

12वीं के बाद बनें क्रिमिनोलॉजिस्ट



अगर आपका इंटेरेस्ट क्राइम, लॉ और इन्वेस्टिगेशन में है तो आप क्रिमिनोलॉजी का कोर्स कर सकते हैं. बढ़ते क्राइम की वजह से इस फील्ड में लोगों की डिमांड बढ़ रही है. यह फील्ड अपराधों के कारण, उनके पैटर्न और उन्हें रोकने के तरीकों को समझने पर आधारित होती है. आज के समय में बढ़ते अपराध और साइबर क्राइम के चलते इस फील्ड में प्रोफेशनल्स की मांग तेजी से बढ़ रही है. ऐसे में आइए जानते हैं कि इस कोर्स में करियर ग्रोथ और सैलरी है.

क्या है क्रिमिनोलॉजी कोर्स?

क्रिमिनोलॉजी एक ऐसा विषय है, जिसमें अपराध के कारण, उसकी जांच, रोकथाम और अपराधियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है. इस फील्ड में करियर बनाने के लिए छात्र 12वीं के बाद क्रिमिनोलॉजी, Forensic Science या संबंधित विषयों में ग्रेजुएशन कर

कनाडा की परमानेंट रेजिडेंसी चाहिए तो पीआर के लिए देनी होगी ज्यादा फीस? विदेशी वर्कर्स के लिए जरूरी खबर

कनाडा में परमानेंट रेजिडेंसी (PR) के लिए अप्लाई करने जा रहे विदेशी वर्कर्स के लिए जरूरी खबर है। सरकार ने एक्सप्रेस एंट्री, प्रोविंशियल नॉर्मिनी प्रोग्राम (PNPs) और फैमिली स्पॉन्सरशिप समेत सभी तरह के प्रोग्राम के लिए PR प्रोसेसिंग फीस बढ़ा दी है। अगर आपका PR एप्लिकेशन प्रक्रिया में है या फिर आप जल्द ही अप्लाई करने की योजना बना रहे हैं, तो फिर आपको ये मालूम होना कि अब प्रोसेसिंग फीस कितनी देनी होगी। नई फीस भारतीय आवेदकों के लिए भी है। नई प्रोसेसिंग फीस हर PR कैटेगरी के लिए बढ़ गई है। यह PR के मुख्य आवेदकों, जीवनसाथी/कॉमन-लॉ पार्टनर और आश्रित बच्चों पर भी लागू होती है। 'राइट ऑफ़ परमानेंट रेजिडेंस फीस' (RPRF) ज्यादातर PR आवेदनों पर लागू होती है और जिसे आवेदन जमा करते समय टाला जा सकता है, उसमें भी बढ़ोतरी हो चुकी है। ज्यादातर कैटेगरी में फीस 4 से 5 फीसदी बढ़ी है, जबकि सबसे ज्यादा फैमिली स्पॉन्सरशिप के लिए फीस बढ़ी है। इस कैटेगरी में फीस वृद्धि 6% से छोड़ा जा नीचे ही है।

नई प्रोसेसिंग फीस हर PR कैटेगरी के लिए बढ़ गई है। यह PR के मुख्य आवेदकों, जीवनसाथी/कॉमन-लॉ पार्टनर और आश्रित बच्चों पर भी लागू होती है। 'राइट ऑफ़ परमानेंट रेजिडेंस फीस' (RPRF) ज्यादातर PR आवेदनों पर लागू होती है और जिसे आवेदन जमा करते समय टाला जा सकता है, उसमें भी बढ़ोतरी हो चुकी है। ज्यादातर कैटेगरी में फीस 4 से 5 फीसदी बढ़ी है, जबकि सबसे ज्यादा फैमिली स्पॉन्सरशिप के लिए फीस बढ़ी है। इस कैटेगरी में फीस वृद्धि 6% से छोड़ा जा नीचे ही है। कौन सी PR फीस बढ़ रही है? अगर विदेशी वर्कर मुख्य आवेदक है, तो उसके लिए नई फीस 600 डॉलर है, जो पहले 575 डॉलर थी। विदेशी वर्कर के साथ आने वाले जीवनसाथी या पार्टनर के लिए भी PR अप्लाई करने पर यही फीस देनी होगी। फेडरल हाई स्किल्ड (एक्सप्रेस एंट्री, PNP, क्यूबेक स्किल्ड वर्कर्स आदि) कैटेगरी के कामगारों के लिए PR प्रोसेसिंग फीस 990 डॉलर हो चुकी है, जो पहले 950 डॉलर थी। इसी कैटेगरी में अगर विदेशी वर्कर अपने जीवनसाथी या पार्टनर के लिए PR अप्लाई कर रहा है, तो उसे 990 डॉलर देने होंगे। बच्चों के लिए यही फीस 270 डॉलर हो चुकी है।

वहीं, अगर किसी वर्कर ने 30 अप्रैल से पहले PR के लिए अप्लाई किया था, लेकिन RPRF को फ़ैमेट डिले करने का ऑप्शन हासिल करने की बेहतरी के लिए भी वक़्त मिलेगा: IT कंपनियां, बैंकिंग सेक्टर, सरकारी संस्थान सैलरी: 4-10 लाख रुपये सालाना (एक्सपर्ट बनने पर और ज्यादा) खासियत: हाई-डिमांड + हाई-पेइंग करियर वीडियो एडिटिंग वीडियो कंटेंट के बढ़ते ट्रेंड ने इस स्किल को बेहद जरूरी बना दिया है. क्या सीखेंगे: प्रीमियर प्रो, आफ्टर इफ़ेक्ट्स, स्टोरीटेलिंग कहां काम मिलेगा: यूट्यूब, फिल्म इंडस्ट्री, मीडिया, डिजिटल एजेंसियां कमाई: 20,000 रुपये से लेकर लाखों तक (फ्रीलांसिंग में ज्यादा स्कोप) ट्रेंड: रील्स और शॉर्ट वीडियो के कारण डिमांड लगातार बढ़ रही है **कंटेंट राइटिंग** अगर आपको लिखने का शौक है, तो यह करियर आपके लिए परफेक्ट है. क्या सीखेंगे: SEO राइटिंग, ब्लॉगिंग, स्क्रिप्ट राइटिंग कहां काम मिलेगा: वेबसाइट्स, न्यूज पोर्टल, कंपनियां स्कोप: हिंदी और इंग्लिश दोनों में तेजी से बढ़ती डिमांड बोनस: घर बैठे काम और फ्रीलांसिंग के मौके क्यों खास है ये कोर्स? कम समय (3-6 महीने) में पूरे किए जा सकते हैं कम फीस या कई बार फ्री में उपलब्ध जॉब-रेडी स्किल्स सिखाते हैं डिग्री के बिना भी करियर शुरू करने का मौका फ्रीलांसिंग और पार्ट-टाइम इनकम के ऑप्शन वर्क फ़्रॉम होम ऑप्शन: खासकर डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट और डिजाइनिंग में।

चीन में फ्री में पढ़ने का चांस! फुली-फंडेड स्कॉलरशिप देने का किया ऐलान

चीन में हायर एजुकेशन फ्री में हासिल करने का मौका मिल रहा है। यहां की एक यूनिवर्सिटी ने फुली-फंडेड स्कॉलरशिप देने का ऐलान किया है, जिसका फायदा भारतीय छात्र भी उठा सकते हैं। चीन की साउथवेस्ट यूनिवर्सिटी 'न्यू सिल्क रोड स्कॉलरशिप' दे रही है। इस स्कॉलरशिप का सबसे बड़ा फायदा ये है कि इसमें फीस माफ है और हर महीने स्टाइपेंड भी दिया जाएगा। चीन हायर एजुकेशन के लिए एक बेहतरीन देश के तौर पर उभर रहा है। यहां की कई यूनिवर्सिटीज टॉप-100 संस्थानों में शामिल हैं।

ये स्कॉलरशिप दो कैटेगरी में बांटी गई है, जिसमें टाइप ए और टाइप बी शामिल हैं। टाइप ए स्कॉलरशिप के तहत पूरी ट्यूशन फीस माफ होगी और हर महीने स्टाइपेंड दिया जाएगा। अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट को हर महीने 1100 येन, पोस्टग्रेजुएट स्टूडेंट को 1400 येन और पीएचडी स्टूडेंट को 1700 येन दिए जाएंगे।

टाइप बी स्कॉलरशिप में सिर्फ ट्यूशन फीस माफ होती है। इसके तहत स्टाइपेंड नहीं मिलता है। दोनों तरह की स्कॉलरशिप में मेडिकल इंश्योरेंस और रहने का खर्च नहीं दिया जा रहा है। इसकी व्यवस्था स्टूडेंट को खुद ही करनी है।

स्कॉलरशिप के लिए कौन अप्लाई कर सकता है?

इस स्कॉलरशिप को उन्हीं छात्रों

वकील बनने का रास्ता : एआईबीई परीक्षा की पूरी जानकारी सिलेबस, पैटर्न और पहली बार में पास करने के स्मार्ट टिप्स

देश में लाखों विद्यार्थी ऐसे हैं जो न सिर्फ करियर की बेहतरी के लिए बल्कि सम्मान और गरिमा के लिए भी वकालत की सेवा से जुड़ना चाहते हैं। ऐसे में सबसे पहले तो यह जानिए कि अगर आप वकालत के पेशे में कदम रखना चाहते हैं, तो सिर्फ LLB की डिग्री काफी नहीं होती। भारत में प्रैक्टिस शुरू करने के लिए आपको अखिल भारतीय बार परीक्षा पास करना जरूरी है, जिसे बार काउंसिल ऑफ इंडिया आयोजित करता है। मैं इस लीगल स्टोरी में बताउंगा कि वकालत की दुनिया में प्रवेश के लिए अखिल भारतीय बार परीक्षा का पूरा रोडमैप क्या होना चाहिए, सिलेबस से लेकर तैयारी की स्ट्रेटेजी तक।

अखिल भारतीय बार परीक्षा क्या है और क्यों जरूरी है?

सबसे पहले तो यह जानिए कि अखिल भारतीय बार परीक्षा, वह क्वालिफाइंग एग्जाम है जिसे पास करने के बाद आपको (CoP) मिलता है, जो आपको भारत में किसी भी कोर्ट में वकालत करने की अनुमति देता है। एक बात सभी को ध्यान में रखनी है कि इसमें आपको पास ही करना होता है। कोई रैंक या मेरिट लिस्ट में नाम लाने की जरूरत नहीं। बार काउंसिल ऑफ इंडिया के सौजन्य से आयोजित यह परीक्षा कुल 100 अंकों की होती है, जिसे ऑफलाइन मोड, पेन-पेपर मोड में आयोजित की जाती है। हर सवाल के लिए 1 अंक निर्धारित

सशस्त्र सीमा बल में मेडिकल ऑफिसर की वैकेंसी, वॉक-इन इंटरव्यू से होगा चयन

मेडिकल क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए सशस्त्र सीमा बल (SSB) ने संविदा के आधार पर जीडीएमओ और अलग-अलग विभागों में विशेषज्ञ डॉक्टर के कुल 35 पदों पर भर्ती के लिए एक आधिकारिक अधिसूचना जारी की है। इसके लिए योग्य और इच्छुक उम्मीदवारों से आवेदन मांगे गए हैं।

सएसबी ने जिन 35 पदों पर वैकेंसी निकाली है, उनमें चिकित्सा विशेषज्ञ के 3, सामान्य शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ के 3, प्रसूति एवं स्त्रीरोग विशेषज्ञ के 2, नेत्र रोग विशेषज्ञ के 3, रेडियोलॉजिस्ट विशेषज्ञ के 2, पैथोलॉजिस्ट विशेषज्ञ के 1, एनेस्थीसिया विशेषज्ञ के एक और



हैं। इस परीक्षा में नेगेटिव मार्किंग का प्रावधान नहीं है। इसमें परीक्षार्थियों को ओपन बुक के रूप में Bare Acts ले जाने की अनुमति है, लेकिन नोट्स नहीं ले जा सकते।

अखिल भारतीय बार परीक्षा के सिलेबस पर ध्यान दें
अखिल भारतीय बार परीक्षा का सिलेबस LLB के दौरान पढ़े गए बेसिक कानूनों पर आधारित होता है। इसमें संवैधानिक विधि, भारतीय दंड संहिता IPC अब भारतीय न्याय संहिता 2023, दंड प्रक्रिया संहिता CrPC अब भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023, दीवानी प्रक्रिया संहिता CPC, भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023, पारिवारिक विधि, संविदा अधिनियम, संपत्ति विधि, प्रशासनिक विधि, व्यावसायिक नैतिकता एवं बार काउंसिल नियम से जुड़े प्रश्न पूछे जाते हैं। इनसे एक नियत संख्या में प्रश्न पूछे जाते हैं। इस परीक्षा के विषयों से जुड़े सिलेबस और उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों के पैटर्न को संलग्न चित्र के जरिए समझ सकते हैं।

मेडिकल ऑफिसर की वैकेंसी, वॉक-इन इंटरव्यू से होगा चयन

जनरल इयूटी मेडिकल ऑफिसर (जीडीएमओ) के 20 पद शामिल हैं।

पद का नाम पदों की संख्या

चिकित्सा विशेषज्ञ 3 सामान्य शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ 3 प्रसूति एवं स्त्रीरोग विशेषज्ञ 2

नेत्र रोग विशेषज्ञ 3 रेडियोलॉजिस्ट विशेषज्ञ 2

पैथोलॉजिस्ट विशेषज्ञ 1 एनेस्थीसिया विशेषज्ञ1

जनरल इयूटी मेडिकल ऑफिसर (GDMO) 20 कुल पद35 कितना मिलेगा वेतन?

आईआईएम-विशाखापत्तनम में हेड नर्स समेत कई पदों पर आवेदन जारी, 18 मई अंतिम तिथि

विशाखापत्तनम देश के प्रतिष्ठित संस्थान में नौकरी करने की इच्छा रखने वालों के लिए एक खास मौका सामने आया है। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम-विशाखापत्तनम) ने संविदा के आधार पर अलग-अलग विभागों में कर्मचारियों के विभिन्न 4 पदों पर भर्ती के लिए एक आधिकारिक अधिसूचना जारी करके रिक्तियों की घोषणा की है। पदों का विवरण:

आईआईएम ने जिन 4 पदों पर वैकेंसी जारी की है, उनमें हेड नर्स के 2 और असिस्टेंट मैनेजर (अकाउंट्स) के 2 पद शामिल हैं। वहीं, असिस्टेंट और अकादमिक एसोसिएट के पदों पर भर्ती आवश्यकता के अनुसार होगी।

इंतजार नहीं, जल्दी करें आवेदन:

इन पदों के लिए ऑनलाइन माध्यम से आवेदन प्रक्रिया 24 अप्रैल से शुरू हो गई है और अप्लाई करने की अंतिम तिथि 18 मई तय की गई है। ऐसे में जो योग्य और इच्छुक उम्मीदवार एप्लीकेशन फॉर्म भरना चाहते हैं, उन्हें आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर तय लास्ट डेट तक या उससे पहले अपना रजिस्ट्रेशन फॉर्म जमा करने की सलाह दी

विविध

बिना डिग्री भी मिल सकती है नौकरी! ये 5 कोर्स खोलेंगे रोजगार के दरवाजे

बिना डिग्री भी मिल सकती है नौकरी! ये 5 कोर्स खोलेंगे रोजगार के दरवाजे

को हल्के में न लें। यह छोटा विषय है लेकिन स्कोर बढ़ाने में बड़ा रोल निभाता है।

आग गलतियां जो आपको नहीं करनी चाहिए

यह परीक्षा में पास करने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी जिनको नजरअंदाज करते हुए आपकी परीक्षा की तैयारी में निरंतरता रहनी चाहिए। जैसे

सिर्फ कोचिंग नोट्स पर निर्भर रहना

Bare Acts को नजरअंदाज करना

ओपन बुक को आसान समझना

रिवीजन को टालना

नोबेल प्रोफेशन की पहली असली परीक्षा

विद्यार्थियों को लगता है कि इसमें सबसे बड़ी बाधा है AIBE की परीक्षा । लेकिन वो यह नहीं जानते हैं कि सही तकनीक और दिशा-निर्देशों के साथ यदि इसकी तैयारी की जाए तो यह बहुत आसानी से इस बाधा को पार कर सकते हैं। AIBE कोई बहुत कठिन परीक्षा नहीं है, लेकिन इसे हल्के में लेना बड़ी गलती हो सकती है। सही रणनीति, Bare Acts की पकड़ और पिछले पेपर की प्रैक्टिस आपको पहली कोशिश में सफलता दिला सकती है। अगर आप वकालत के करियर को लेकर गंभीर हैं, तो AIBE को सिर्फ एक परीक्षा नहीं, बल्कि अपने प्रोफेशन की पहली असली परीक्षा समझें।



आज के दौर में नौकरी पाना पहले से कहीं ज्यादा चैलेंज वाला काम हो गया है. बढ़ते कंपीटिशन के बीच सिर्फ डिग्री होना ही काफी नहीं रह गया है, बल्कि स्किल्स (कौशल) भी उतनी ही जरूरी हो गई है. यही वजह है कि आज के समय के युवा ऐसे कोर्स को करने पर जोर देते हैं, जिससे बिना डिग्री या कम डिग्री के भी अच्छी नौकरी मिल जाए. ऐसे में आइए जानते हैं 5 शॉर्ट-टर्म और स्किल बेस्ड कोर्स युवाओं के लिए नए अवसर खोल रहे हैं.

डिजिटल मार्केटिंग

डिजिटल इंडिया के दौर में यह सबसे तेजी से बढ़ता हुआ फील्ड है.

क्या सीखेंगे: SEO, सोशल मीडिया मार्केटिंग, गूगल एड्स, कंटेंट स्ट्रेटेजी

कहां काम मिलेगा: कंपनियां, स्टार्टअप्स, ई-कॉमर्स, फ्रीलांसिंग

शुरुआती सैलरी: 15,000 – 40,000/महीना (अनुभव के साथ तेजी से बढ़ती है)

खास बात: घर बैठे भी काम करने का मौका

ग्राफिक डिजाइनिंग

क्रिएटिव माइंड वाले लोगों के लिए यह बेहतरीन ऑप्शन है.

क्या सीखेंगे: फ़ोटोशॉप, इलस्ट्रेटर, UI/UX डिजाइन कहां काम मिलेगा: मीडिया हाउस, विज्ञापन एजेंसियां, स्टार्टअप्स

स्कोप: सोशल मीडिया कंटेंट से लेकर ब्रांडिंग तक हर जगह डिमांड

बोनस: फ्रीलांसिंग से इंटरनेशनल क्लाइंट्स भी मिल सकते हैं

साइबर सिक्योरिटी

डेटा चोरी और ऑनलाइन फ्रॉड बढ़ने के कारण इस फील्ड की डिमांड तेजी से बढ़ रही है.

क्या सीखेंगे: एंथ्रकल हैकिंग, नेटवर्क सिक्योरिटी, डेटा प्रोटेक्शन

भारतीय सेना में सीएसबीओ ग्रेड-II के 190 पदों पर आवेदन शुरू, 10वीं पास के लिए सुनहरा अवसर

भारतीय सेना ने सीएसबीओ ग्रेड-II के पदों पर भर्ती के लिए आधिकारिक नोटिफिकेशन जारी किया है। यह भर्ती रक्षा मंत्रालय के तहत मुख्यालय 2 सिग्नल ट्रेनिंग सेंटर, पणजी (गोवा) द्वारा निकाली गई है। इस भर्ती के जरिए कुल 190 ग्रुप सी सिविलियन पदों को भरा जाएगा। देशभर के योग्य उम्मीदवार इसके लिए आवेदन कर सकते हैं।

31 मई तक आवेदन करने का मौका

आवेदन प्रक्रिया 2 मई 2026 से शुरू हो चुकी है और इच्छुक अभ्यर्थी 31 मई 2026 तक आवेदन कर सकते हैं। खास बात यह है कि इस भर्ती के लिए आवेदन ऑनलाइन इमेल के माध्यम से करना होगा। उम्मीदवारों को आवेदन फॉर्म भारतीय सेना की आधिकारिक वेबसाइट indianarmy.nic.in से डाउनलोड करना होगा और निर्धारित इमेल आईडी पर भेजना होगा।

रिवितयों का विवरण और योग्यता

इस भर्ती अभियान के तहत कुल 190 पदों पर नियुक्तियां की जाएंगी। इनमें अनारक्षित (UR) के 94, अनुसूचित जाति (SC)

के 22, अनुसूचित जनजाति (ST) के 12, अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) के 43, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) के 19 पद शामिल हैं। इसके अलावा दिव्यांग (PwD) के 12 और पूर्व सैनिक 20 पद निर्धारित किए गए हैं। कौन कर सकता है आवेदन? योग्यता की बात करें तो उम्मीदवार का कम से कम मैट्रिक (10वीं) पास होना अनिवार्य है। साथ ही, PBX हैडलिंग का कम से कम 6 महीने का अनुभव भी जरूरी है।

चयन प्रक्रिया उम्मीदवारों का चयन मुख्य रूप से लिखित परीक्षा के आधार पर किया जाएगा। यह परीक्षा 100 अंकों की होगी, जिसमें सामान्य बुद्धिमत्ता , गणितीय योग्यता , सामान्य ज्ञान , अंग्रेजी और रीजनिंग से प्रश्न पूछे जाएंगे।

लिखित परीक्षा में सफल उम्मीदवारों को प्रैक्टिकल टेस्ट और इंटरव्यू के लिए बुलाया जाएगा। ये दोनों चरण केवल क्वालिफाइंग प्रकृति के होंगे। अंतिम मेरिट सूची लिखित परीक्षा के अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी।

जरूरी निर्देश

उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि आवेदन करने से पहले आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर पूरी जानकारी ध्यान से पढ़ लें। सभी आवश्यक दस्तावेजों की स्कैन कॉपी पहले से तैयार रखें और इमेल भेजते समय सभी विवरण सही तरीके से भरें, क्योंकि किसी भी त्रुटि के कारण आवेदन निरस्त किया जा सकता है।

यह भर्ती ऑल इंडिया सर्विस दायित्व के तहत है, यानी चयनित उम्मीदवारों को देश के किसी भी हिस्से में नियुक्ति मिल सकती है। इसलिए अभ्यर्थियों को आवेदन करते समय सभी नियमों और शर्तों का पालन करना जरूरी है।

ऐसे करें आवेदन

उम्मीदवारों को आवेदन फॉर्म पीडीएफ फॉर्मेट में डाउनलोड करके माध्यम से भरना होगा। इसके बाद फॉर्म को सही नाम से सेव कर आधार कार्ड, 10वीं प्रमाणपत्र, PBX अनुभव प्रमाणपत्र और अन्य जरूरी दस्तावेजों के साथ निर्धारित इमेल आई डी sunshine.rise@nic.in पर भेजना होगा। अधूरे या समय सीमा के बाद भेजे गए आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

मर्यादा का ध्यान रखें सीएम उमर अब्दुल्ला : भाजपा



श्रीनगर। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजे इस बार सबके लिए चौंकाने वाले हो सकते हैं. अगर चुनाव आयोग के आधिकारिक रुझानों की बात करें तो ममता बनर्जी की 15 साल की सत्ता जाती दिख रही है और भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन रही है। इसको लेकर जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला का रिएक्शन चर्चा का विषय बन गया है। सीएम उमर अब्दुल्ला बंगाल नतीजों के रुझान देखकर बेहद चौंक गए हैं। जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर केवल दो शब्दों में अपनी हैरानी बयां करते हुए लिखा- ब्लडी हेल! इसके साथ उन्होंने ऐसे इमोजी का इस्तेमाल किया है, मानो रुझान देखकर उनकी आंखें फटी की फटी रह गई हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सत पॉल शर्मा ने उमर अब्दुल्ला के ट्वीट पर प्रतिक्रिया देते हुए उनकी भाषा पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि एक मुख्यमंत्री रह चुके नेता को अपनी बात रखते समय मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए।

पंजाब में एफआईआर पर गरजे भाजपा सांसद संदीप पाठक



चंडीगढ़। राज्यसभा सांसद संदीप पाठक ने पंजाब में अपने खिलाफ दो एफआईआर दर्ज होने की खबरों के बाद सरकारी तंत्र के दुरुपयोग का आरोप लगाया है, हालांकि उन्होंने यह भी कहा है कि उन्हें इस संबंध में कोई आधिकारिक सूचना नहीं मिली है। उन्होंने कहा कि कल से टीवी चैनलों पर खबरें आ रही हैं कि पंजाब में मेरे खिलाफ दो एफआईआर दर्ज की गई हैं। मुझे अभी तक कोई औपचारिक या अनौपचारिक सूचना नहीं मिली है। पाठक ने कहा कि विस्तृत जवाब देने से पहले वह एफआईआर की प्रत का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं प्रति मिलने का इंतजार कर रहा हूँ ताकि जवाब दे सकूँ। मेरे पास अभी तक कोई जानकारी नहीं है। अगर सरकारी तंत्र के दुरुपयोग के बाद एफआईआर दर्ज की गई है, तो मैं उसे देखने के बाद पूरी तरह से जवाब दूंगा। पाठक ने हाल ही में आम आदमी पार्टी छोड़ दी और छह अन्य राज्यसभा सांसदों के साथ भाजपा में शामिल हो गए, जिससे राजनीतिक तूफान खड़ा हो गया।

पश्चिम बंगाल में भाजपा ने पलटा खेला



कोलकाता। पश्चिम बंगाल के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया, जिससे तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी की लगातार चौथी बार सत्ता में आने की महत्वाकांक्षा को झटका लगा। भाजपा पश्चिम बंगाल में पहली बार सरकार बनाने की राह पर है, उस राज्य में जहां तृणमूल कांग्रेस का 15 साल का शासन और उससे पहले कम्युनिस्टों का 34 साल का शासन रहा था। पश्चिम बंगाल के विपक्ष के नेता और भाजपा उम्मीदवार सुवेंदु अधिकारी, जो पार्टी के प्रदर्शन से उत्साहित हैं, ने कहा कि भाजपा 180 से अधिक सीटों के साथ सरकार बनाएगी। उन्होंने आगे कहा कि सभी हिंदू नरेंद्र मोदी के पक्ष में एकजुट हैं... चार चरणों की मतगणना के बाद भाजपा अपनी सरकार बना रही है। हिंदू ईवीएम का मतलब भाजपा है, मुस्लिम ईवीएम का मतलब टीएमसी है, मालदा, मुर्शिदाबाद और उत्तर दिनाजपुर को छोड़कर, जहां लोगों ने कांग्रेस को वोट दिया है।

त्रिपुरा में चक्रवर्ती ने अमिताभ दत्ता को हराया



अगरतला। भाजपा के जहर चक्रवर्ती ने सोमवार को त्रिपुरा के धर्मनगर विधानसभा सीट जीत ली है। सीपीआईएम के अमिताभ दत्ता को 18290 से हराया। कांग्रेस के चयन भट्टाचार्य को 5936 वोट मिले। चक्रवर्ती को कुल 24,291 वोट मिले, जो उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वियों से कहीं अधिक थे। सीपीआई (एम) के उम्मीदवार अमिताभ दत्ता को 6,001 वोट मिले, जबकि कांग्रेस के उम्मीदवार चयन भट्टाचार्य को 5,936 वोट प्राप्त हुए। धर्मनगर उपचुनाव में कुल 6 उम्मीदवार मैदान में थे। मौजूदा विधायक विश्व बंधु सेन के निधन के कारण इस विधानसभा क्षेत्र में उपचुनाव कराना आवश्यक हो गया था। धर्मनगर त्रिपुरा का एक विधानसभा क्षेत्र है। यह क्षेत्र उत्तरी त्रिपुरा जिले और पूर्वी त्रिपुरा क्षेत्र में स्थित है। इस सीट के लिए आरक्षण सामान्य है। धर्मनगर, त्रिपुरा पूर्व (अनुसूचित जनजाति) लोकसभा क्षेत्र का हिस्सा है। त्रिपुरा राज्य विधानसभा में कुल 60 सीटें हैं।

तेजस्वी यादव का एनडीए पर बड़ा हमला



पटना। बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने सोमवार को भागलपुर में विक्रमशिला सेतु पुल पर एक शिलाखंड गिरने की घटना के बाद एनडीए सरकार की आलोचना की। एक बयान में, राष्ट्रीय जनता दल के नेता ने इस घटना के लिए भ्रष्टाचार को जिम्मेदार ठहराया और कहा कि पुल को पहले ही असुरक्षित घोषित कर दिया गया था। उन्होंने आगे कहा कि सौभाग्यवश पुल गिरने से किसी की जान नहीं गई। एक्स कार्यक्रम में तेजस्वी यादव ने कहा कि और अब, भ्रष्ट एनडीए सरकार की कृपा से, भागलपुर का विक्रमशिला पुल गंगा नदी में समाधि ले चुका है। भ्रष्टाचार का इससे बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण और क्या चाहिए? पिछले महीने हमने सरकार को चेतावनी दी थी कि यह पुल गिर सकता है, लेकिन हमेशा की तरह सरकार ने अपने भ्रष्ट तंत्र का बचाव करते हुए पल्ल झाड़ लिया। जब पुल गिरा, उस समय उस पर कई वाहन थे, लेकिन ईश्वर की कृपा से वे गिरते हुए मलबे पर नहीं थे।

भाजपा की नवीन नीति ने कैसे बदला पश्चिम बंगाल का गणित?

नईदिल्ली। बिहार की कुर्सी के बाद अब पश्चिम बंगाल की चाबी। भारतीय जनता पार्टी की %नवीन नीति% की दूसरी बड़ी सफलता सामने दिख रही है। बिहार में नीतीश कुमार को हटा पहली बार भाजपाई मुख्यमंत्री बनाने के पीछे नए-नए राष्ट्रीय अध्यक्ष बने नितिन नवीन की कितनी भूमिका थी, इसपर पार्टी में कोई कुछ बोलने को तैयार नहीं था और न होगा। लेकिन, जब बात पश्चिम बंगाल की होगी तो निश्चित तौर पर नितिन नवीन के खाते में इसे डालना पड़ेगा। भाजपा ने 14 दिसंबर को पटना के बांकीपुर सीट से तत्कालीन विधायक नितिन नवीन को पार्टी का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाया, तभी से यह चर्चा चल निकली थी कि निशाना पश्चिम बंगाल है। 20 जनवरी को जब वह राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्विरोध बने, तब तक तस्वीर बहुत साफ हो रही थी। फिर बिहार में सत्ता हस्तांतरण और अब पश्चिम बंगाल में भूतो-न-भविष्यति जैसी जीत ने सबकुछ साफ कर दिया है। इस परिणाम के परिदृश्य में जानना रोचक है कि नितिन नवीन को ऐन वक्त पर लाने का मतलब क्या था ?

पश्चिम बंगाल में मुस्लिम आबादी 30 प्रतिशत तक बताई जाती है। मतदाताओं के विशेष गहन पुनरीक्षण में बवाल बाद में आया, लेकिन अंदाज़ा भाजपा को पहले से था। मतदान के दौरान वोट प्रतिशत बढ़ने के पीछे भी यही वजह बताई जा रही थी कि मुस्लिम आबादी एकमुश्त एक तरफ जा रही है तो जवाब में हिंदू जातियों ने गुटबंदी की है। यह गुटबंदी चुनाव परिणाम के रूप में इस तरह सामने आएगी, यह एग्जिट पोल भी बता रहे थे। पहली बार पश्चिम बंगाल में इस तरह बांग्लादेशियों को अलगथलग करने और तुष्टिकरण का मुखर विरोध करने के साथ वर्गों में बंटे हिंदुओं को एकजुट करने के लिए भाजपा ने चक्रव्यूह की रचना की थी।

भाजपा ने देखा कि बंगाल में बिहार से जाकर स्थायी तौर पर बसे लोगों की संख्या ठीकठाक है। इसके साथ ही यह भी कि अगड़ी जाति, खासकर ब्राह्मण और काश्मिरा ठीकठाक हैं। ऐसे में कायस्थ जाति के नितिन नवीन को भाजपा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया। इसके बाद चक्रव्यूह की रचना नितिन नवीन ने काफी हद तक खुद की। नितिन ने पश्चिम बंगाल से सटे अपने राज्य बिहार से भाजपा के हर स्तर के नेता को पश्चिम बंगाल में करीब 90 दिनों के लिए शिफ्ट कर दिया। इसमें पश्चिम बंगाल



के वोटरों की जाति का ख्याल रखते हुए अनुसूचित जाति के नेताओं को तो भेजा ही गया, ब्राह्मण, कायस्थ और राष्‍ट्रपूतों को भी ठीकठाक संख्या में लगाया गया। वैसे, अनुसूचित जाति के बाद चूँकि पश्चिम बंगाल में अन्य पिछड़ा वर्ग का प्रभाव है तो नितिन नवीन ने ओबीसी नेताओं की भी बड़ी खेप बंगाल में दूर-सुदूर तक भेज दी। खास बात यह भी रही कि इस बार भाजपा ने भारी संख्या में अपनी नेत्रियों को भी पश्चिम बंगाल में जमाए रखा। कई तो लगातार महीनाभर वहीं रहें। देश के अन्य राज्यों के मुकाबले बिहार की भाजपा नेत्रियां वहां ज्यादा घूमती नजर आईं।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के खाते में पश्चिम बंगाल का यह करिश्मा आ रहा है तो इसके पीछे पार्टी को सोच भी है। पार्टी ने बांग्लादेशियों को अलगथलग करने के साथ ही मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की तुष्टिकरण की नीति के खिलाफ पूरा प्लान तैयार किया था। नितिन नवीन की पूरी टीम इस प्लान के तहत काम करती रही। हर पॉकेट में उससे जुड़े लोगों को भेजा गया, ताकि वह अंदर-अंदर मेलजोल बढ़ाकर अपने बनाए नेटवर्क के बीच भाजपा की नीति को प्रसारित करे। पश्चिम बंगाल से लौटे भाजपा नेताओं ने मीडिया से बातचीत में कहा कि हमें पार्टी की नीतियों पर जीत के लिए काम करना था। हम राष्ट्रवाद की बात करते हुए पश्चिम बंगाल की मौजूदा परिस्थितियों से लोगों को अवगत करा रहे थे। हमें जहां की जिम्मेदारी दी गई थी, उस बारे में पार्टी ने होमवर्क कर रखा था। हम स्थानीय परिस्थितियों और बाकी देश से अलग दिख रहे पश्चिम बंगाल के कारणों के बारे में लोगों से बात की। बताया कि कैसे पश्चिम बंगाल में देश से अलग माहौल और परिस्थिति है। लोग समझ रहे थे, इसलिए डरने की जगह मुखर हो रहे थे। यह मुखर होना वक्त की मांग थी, वरना पश्चिम बंगाल में चुसपैठ का अंत संभव नहीं होता।

सैंसेक्स 356 अंक बढ़ा निफ्टी 24,100 के पार

नईदिल्ली। आईटी और बैंकिंग शेयरों में कमजोरी तथा चुनावी नतीजों से जुड़ी अस्थिरता के चलते निफ्टी50 और सेंसेक्स दिन के ऊपरी स्तरों से नीचे बंद हुए। बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स 356 अंक बढ़ा, जबकि निफ्टी 50 24,100 के पार बंद हुआ। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 77,257.27 के भाव पर खुला। दिन के कारोबार के दौरान इंडेक्स ने 77,910.75 के हाई और 76,939.54 के लो रेंज में ट्रेड किया। दिन के अंत में सेंसेक्स 356 अंक यानी 0.46 प्रतिशत की बढ़त लेकर 77,269.40 पर बंद हुआ। इसी तरह, 50 शेयरों वाला निफ्टी 50 इंडेक्स 24,063.55 के भाव पर खुला। दिन के कारोबार के दौरान इंडेक्स ने 24,290.20 के हाई और 24,004.75 के लो रेंज में ट्रेड किया। दिन के अंत में निफ्टी 50 122 अंक यानी 0.51 प्रतिशत की चढ़कर 24,119.30 अंक पर बंद हुआ।

10ग्राम सोना हुआ सस्ता, 2500000 रुपए से लुढ़की चांदी

नईदिल्ली। सोने-चांदी के वायदा भाव में सोमवार (4 मई) को गिरावट देखने को मिल रही है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर दोनों की कीमतें कमजोरी के साथ खुलीं। खबर लिखे जाने के समय सोने में 0.26 फीसदी की गिरावट आई है, 10 ग्राम सोने का भाव 1,50,951 रुपए के आसपास है। चांदी 0.49 फीसदी लुढ़की है, ये 2,49,716 रुपए प्रति किलोग्राम पर कारोबार कर रही है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना-चांदी नरमी के साथ कारोबार कर रहे हैं। COMEX पर सोने का वायदा भाव 4,644 डॉलर प्रति औंस पर खुला, जो पिछले सत्र में 4,644.50 डॉलर पर बंद हुआ था। बाद में इसमें गिरावट आई और यह 29.70 डॉलर टूटकर 4,614.80 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार करता दिखा। इस साल सोने ने 5,586.20 डॉलर प्रति औंस का उच्चतम स्तर छुआ है।

एसबीआई चौथी तिमाही नतीजे के साथ डिविडेंड की उम्मीद

नईदिल्ली। देश के सबसे बड़े सरकारी बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने अपने चौथी तिमाही के नतीजों की तारीख बता दी है। बैंक के मुताबिक 8 मई 2026 को बोर्ड की बैठक होगी, जिसमें जनवरी से मार्च तिमाही और पूरे वित्त वर्ष 2025-26 के नतीजों को मंजूरी दी जाएगी। बाजार में अब इस तारीख को लेकर काफी हलचल है, क्योंकि एसबीआई के नतीजे पूरे बैंकिंग सेक्टर के लिए अहम माने जाते हैं। अगर पिछले ट्रेड को देखें तो एसबीआई ने अपने तीसरी तिमाही के नतीजे 7 फरवरी को दोपहर करीब 1:53 बजे जारी किए थे। ऐसे में उम्मीद लगाई जा रही है कि इस बार भी 8 मई को लगभग इसी समय नतीजे सामने आ सकते हैं। हालांकि इसका आधिकारिक समय कंपनी की तरफ से नहीं बताया गया है। इस बार एक और अहम बात यह है कि बैंक की बोर्ड बैठक में डिविडेंड पर भी फैसला हो सकता है।

पश्चिम एशिया में तनाव के बीच रुपए में गिरावट

मुंबई। पश्चिम एशिया में जारी तनाव से बाजारों में अस्थिरता बनी रहने के बीच रुपया सोमवार को शुरुआती कारोबार में 11 पैसे टूटकर 94.95 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि ब्रेंट तेल की कीमत 108 अमेरिकी डॉलर के आसपास बनी हुई है जिससे भारत जैसी तेल आयात करने वाली अर्थव्यवस्थाएं दबाव में हैं। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनियम बाजार में रुपया शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 94.95 पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव से 11 पैसे की गिरावट दर्शाता है। रुपया वृहस्पतिवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 94.84 पर बंद हुआ था। इस बीच, छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.03 प्रतिशत की बढ़त के साथ 98.19 पर रहा।

स्टेल प्रमुख समाचार

बाबर आजम की कप्तानी में पहली बार जीती पीएसएल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान सुपर लीग के फाइनल मुकाबले में आखिरकार वह पल आ ही गया जिसका इंतजार लंबे समय से किया जा रहा था। पेशावर जाल्मी ने शानदार

प्रदर्शन करते हुए खिताब अपने नाम कर लिया और कप्तान बाबर आजम के चेहरे पर जीत की खुशी साफ नजर आई।

मौजूजू जानकारी के अनुसार, पेशावर जाल्मी ने फाइनल में हैदराबाद किंग्समैन को पांच विकेट से हराकर यह खिताब जीता है। यह मुकाबला लाहौर के गदाफी स्टेडियम में खेला गया, जहां पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख मोहसिन नकवी ने विजेता टीम को ट्रॉफी सौंपी।

गौरतलब है कि पेशावर जाल्मी के लिए यह दूसरी बार खिताब जीतने का मौका रहा है, जबकि 2017 के बाद यह उनका पहला खिताब है। बता दें कि बाबर आजम पहले भी खिलाड़ी के तौर पर लीग जीत चुके थे, लेकिन कप्तान के रूप में यह उनकी पहली ट्रॉफी है, जो उनके लिए खास मानी जा रही है।

फाइनल मुकाबले में असली हीरो एरॉन हाईडी रहे, जिन्होंने गेंद और बल्ले दोनों से शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने पहले गेंदबाजी करते हुए चार विकेट लेकर हैदराबाद की टीम को 18 ओवर में 129 रन पर समेट दिया। हैदराबाद की ओर से सैन अयूब ने 54 रन की संघर्षपूर्ण पारी खेली, लेकिन बाकी बल्लेबाज उनका साथ नहीं दे सके।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी पेशावर जाल्मी को शुरुआत अच्छी नहीं रही और टीम ने जल्दी ही 40 रन पर चार विकेट गंवा दिए। खुद बाबर आजम बिना खाता खोले आउट हो गए, जिससे टीम दबाव में आ गई। इसके अलावा मोहम्मद हारिस, कुसल मंडिस और माइकल ब्रेसवेल भी सस्ते में पवेलियन लौट गए। हालांकि इसके बाद एरॉन हाईडी ने एक बार फिर जिम्मेदारी संभाली और नाबाद 56 रन की अहम पारी खेली है।

आर्थिक/वाणिज्य/वित्तगत/

प्रमुख समाचार

ऑ जयंती लाल भण्डारी

इस समय भारत मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों के माध्यम से निर्यात के नए बाजारों में दस्तक देते हुए दिखाई दे रहा है। हाल ही में 27 अप्रैल को भारत और न्यूजीलैंड के बीच एक ऐतिहासिक एफटीए पर भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और न्यूजीलैंड के व्यापार और निवेश मंत्री टॉड मैक्ले के द्वारा हस्ताक्षर किए गए हैं। दोनों देशों ने 22 दिसंबर 2025 को इस एफटीए के लिए वार्ता पूरी की थी। गौरतलब है कि भारत-न्यूजीलैंड के बीच हुए इस एफटीए के तहत न्यूजीलैंड में 100 प्रतिशत भारतीय निर्यात पर शून्य शुल्क (जीरो ड्यूटी) सुनिश्चित किया गया है।

भारत भी न्यूजीलैंड के 95 प्रतिशत निर्यात पर शुल्क समाप्त करेगा या कम

करेगा। खास बात यह है कि इस एफटीए के तहत ऐसे कई उत्पादों को सूची से बाहर रखा गया है, जो भारत के किसानों और कृषि क्षेत्र के हितों से जुड़े हैं। पिछले वर्ष 2025 में भारत के द्वारा ब्रिटेन और ओमान के साथ किए गए एफटीए का भी इसी वर्ष 2026 में आगामी महीनों में कार्यान्वयन शुरू होगा।

साथ ही 27 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित भारत-यूरोपीय शिखर सम्मेलन के दौरान यूरोपीय आयोग का अध्यक्ष उर्सुला और यूरोपियन परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा की उपस्थिति में हस्ताक्षरित हुए भारत-यूरोपीय संघ एफटीए का क्रियाव्यवन भी इसी वर्ष संभावित है। इस एफटीए से दो अरब लोगों का विशाल उत्साह बढ़ेगा।

वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग एक चौथाई हिस्सा होगा। इस समझौते को सभी समझौतों की जननी कहा गया है। भारत और अमेरिका के बीच भी



व्यापार समझौते की वार्ता तेजी से आगे बढ़ रही है। इस वर्ष सात फरवरी को भारत और अमेरिका के बीच हुए अंतरिम व्यापार समझौते (आईटीए) के फ्रेमवर्क के तहत अमेरिका ने उत्पादों पर टैरिफ 50 फीसदी से घटाकर 18 फीसदी कर दिया था।

फिर अमेरिका के उच्चतम न्यायालय ने

से 150 दिनों के लिए सभी देशों पर 10 प्रतिशत का एक समान अधिभार लगाया था, जो जारी है।

अब अंतरिम व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने और व्यापक द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) के तहत बातचीत वार्ता आगे बढ़ाने हेतु अमेरिका की राजधानी

वॉशिंगटन डीसी में 21 से 23 अप्रैल तक चली 'साथक और भविष्योन्मुखी चर्चाओं' के बाद भारत और अमेरिका के वार्ताकारों के बीच सकारात्मक प्रगति हुई है। उम्मीद है कि यह अंतरिम व्यापार समझौता भी इसी वर्ष लागू हो सकेगा।

इन सबके साथ-साथ अब मॉरीशस, यूएई, ऑस्ट्रेलिया और चार यूरोपीय देशों आइसलैंड, स्विट्जरलैंड, नॉर्वे और लिकटेंस्टाइन के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (एफ्टा) के साथ सफलतापूर्वक कार्यान्वित हो रहे एफटीए के और अधिक लाभ मिलते हुए दिखाई देंगे।

इतना ही नहीं, ईरान संकट के बीच भारत निर्यात और कारोबार के लिए नए बाजारों में जमने की तैयारी में है। इसके लिए कनाडा, इजराइल, रूस, पेरू, चिली, दक्षिण अफ्रीका और मेक्सिको के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर तेजी से काम हो रहा है।

बंगाल-असम में जीत पर भाजपा दफ्तर में जश्न



रायपुर । पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा को अपेक्षित सफलता मिली है पश्चिम बंगाल में पहली बार भाजपा की सरकार बनना तय है। तीन बार से जीत दर्ज कर 15 साल से सत्तासीन टीएमसी अब बाहर हो गई है। सत्ता जाने के बाद अब संगठन को बचाए रखने की चुनौती ममता बनर्जी के लिए है। असम में भाजपा की तीसरी बार सरकार बनने के साथ हेमंता का दूसरी बार मुख्यमंत्री बनना तय है। केरल में सत्तासीन एलडीएफ वामपंथी सरकार के जाने के साथ पूरे देश में कम्युनिष्ट का अखिरी किला भी ढह गया



वहां कांग्रेस गठबंधन वाले यूडीएफ को पूर्ण बहुमत मिला है। तमिलनाडु में सत्तासीन डीएमके बुरी तरह से पराजित होकर तीसरे नंबर पर चली गई है। पहली बार चुनाव मैदान में

उतरे अभिनेता थलपति विजय की पार्टी टीवीके बहुमत के करीब है। जबकि भाजपा गठबंधन वाली एआई एडीएमके दूसरे नंबर पर किंतु सत्ता से दूर है। पुंड्रचेरी जैसे छोटे राज्य ने भाजपा गठबंधन वाली सरकार का बनना तय है। दूसरी बार एन रंगा स्वामी मुख्यमंत्री बन सकते हैं। भाजपा की जीत में महिला सशक्तिकरण विकसित भारत की योजनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। छत्तीसगढ़ के नेता बड़ी संख्या में बंगाल और असम गये थे वहां जीत से यहां के नेताओं और कार्यकर्ताओं में भारी खुशी व्याप्त है।भारतीय जनता पार्टी प्रदेश

कार्यालय कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव के साथ कार्यकर्ता पांच राज्य को चुनाव परिणाम का लाइव देखते नजर आए। भाजपा के पक्ष में स्पष्ट रुझान आते ही कार्यालय में जश्न शुरू हो गया।

इस अवसर पर नवीन मार्कंडेय, यशवन्त जैन, अशोक बजाज, विजयशंकर मिश्रा, मितुल कोठारी, सुनील पिह्लई आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री देव ने कहा कि पश्चिम बंगाल की जनता अब तुष्टीकरण और अराजकता की राजनीति से त्रस्त हो चुकी है।

राष्ट्रहित की विचारधारा की जीत: संजय श्रीवास्तव

रायपुर। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक जीत की खुशी के अवसर पर आज रायपुर के शंकर नगर टर्निंग प्वाइंट पर नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव द्वारा साथी कार्यकर्ताओं के साथ आम नागरिकों एवं राहगीरों को झालमुड़ी वितरण कर हर्षोल्लास के साथ जश्न मनाया गया।

इस अवसर पर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि पश्चिम बंगाल में मिला यह ऐतिहासिक जनदेश भारतीय जनता पार्टी की नीतियों, सिद्धांतों एवं जनसेवा के प्रति समर्पण का प्रतीक है। उन्होंने इस जीत का मुख्य श्रेय देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं एवं पश्चिम बंगाल की जागरूक जनता को दिया।

उन्होंने आगे कहा कि भारतीय



जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जमीनी स्तर पर अथक परिश्रम करते हुए दिन-रात एक कर दिया, जिसका परिणाम आज इस ऐतिहासिक विजय के रूप में सामने आया है। यह जीत केवल एक राजनीतिक सफलता नहीं, बल्कि विकास, सुशासन एवं राष्ट्रहित की विचारधारा की जीत है।

इस अवसर पर भाजपा

अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष मखमूर इकबाल खान, पार्षद राजेश गुप्ता, राम प्रजापति, अनूप खेलकर, विकास अग्रवाल , संदीप गंधेल, सुधीर चौबे, जिशांत सिद्धकी, हरिवंश वर्मा, इंंदर जैन, ओम राठीर, विपिन पटेल, सुजीत छाबड़ा , मीना सेन, अनिल बाघ, कान्हा ठाकुर एवं बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ट्रांसमिशन कंपनी औरओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी के बीच सामूहिक दुर्घटना बीमा पर अनुबंध



रायपुर छत्तीसगढ़ स्टेट पावर ट्रांसमिशन कंपनी के मानव संसाधन विभाग द्वारा अपने नियमित अधिकारियों- कर्मचारियों के लिए सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा पॉलिसी कराई गई। इस संबंध में आज मुख्य अभियंता मानव संसाधन ट्रांसमिशन कार्यालय में अनुबंध करार किया गया। बीमा पॉलिसी 5 मई 2026 रात्रि 12 बजे से एक वर्ष के लिए प्रभावशील होगी।

इस अवसर पर मुख्य अभियंता मानव संसाधन ट्रांसमिशन श्रीमती

रश्मि वर्मा एवं ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री प्रदीप कुमार सिंहा के बीच औपचारिक दस्तावेजों का आदान प्रदान किया गया। कार्यक्रम मे उपमहाप्रबंधक औद्योगिक संबंध श्री गोपाल खंडेलवाल, सहायक प्रबंधक श्री टीपी शर्मा ,ओरिएंटल इंश्योरेंशन कंपनी के महाप्रबंधक श्री लुकेश साहू उपस्थित थे।

योजना के तहत कार्य अवधि में मृत्यु होने पर जोरिखम राशि रुपए 15 लाख एवं कार्य अवधि के अलावा अन्य अवधि में दुर्घटनावश

मृत्यु होने पर राशि रुपए 5 लाख प्रति कार्मिक देने का प्रावधान किया गया है। कंपनी द्वारा दुर्घटना की सूचना अनिवार्य रूप से बीमा कंपनी को 24 घंटे के भीतर देना होगा। साथ ही 30 दिन के अंदर निर्धारित दावा प्रपत्र एवं समस्त वांछित दस्तावेजों की 3प्रतियां व्यक्तिगत रूप से उप महा प्रबंधक औद्योगिक संबंध छत्तीसगढ़ स्टेट पावर ट्रांसमिशन कार्यालय से परीक्षण कराके बीमा कंपनी को भेजना अनिवार्य होगा। दस्तावेज को भेजने हेतु वरिष्ठ व्यावसायिक प्रबंधक, मेसर्स दी ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, प्रमुख व्यावसायिक कार्यालय , एम आई जी 14/15, शंकर नगर, सेक्टर 3, रायपुर, छत्तीसगढ़, पिन नंबर 492004, दूरभाष क्रमांक 9168727775 में प्रेषित करना होगा। यह योजना गैर अंशदायी प्रकृति पर आधारित है।

जनता के विश्वास और कार्यकर्ताओं के समर्पण की जीत : रमेश सिंह



रायपुर। पश्चिम बंगाल, असम एवं पुडुचेरी सहित अन्य राज्यों के विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त सफलता की खुशी में, भाजपा जिला रायपुर द्वारा जिला कार्यालय एकात्म परिसर में ढोल-नगाड़ों, आतिशबाजी एवं मिठाइयों के साथ भव्य विजय उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पार्टी के पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं समर्थक उपस्थित रहे और एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी साझा की।

भाजपा रायपुर शहर जिला अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर ने कहा कि इन राज्यों के चुनाव परिणामों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि लोकतंत्र में जनता की आवाज सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि यह सफलता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व, संगठन की मजबूती और कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत का परिणाम है। उन्होंने इसके लिए शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया।

रमेश सिंह ठाकुर ने कहा कि यह विजय हजारों समर्पित कार्यकर्ताओं के संघर्ष, तपस्या और प्रतिबद्धता का प्रतिफल है, जिन्होंने हर परिस्थिति में पार्टी के सिद्धांतों को मजबूती से आगे बढ़ाया। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं को इस सफलता के लिए बधाई देते हुए कहा कि जनता का यह विश्वास पार्टी को और अधिक सेवा एवं विकास के कार्यों के लिए प्रेरित करेगा।

मुख्यमंत्री राजनांदगांव के जनसमस्या निवारण शिविर में हुए शामिल

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय सुशासन तिहार के अंतर्गत मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय राजनांदगांव जिले के मोतीपुर में आयोजित जनसमस्या निवारण शिविर में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने जनकल्याण और सुशासन के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए महतारी बंदन योजना के तहत 27वीं किस्त के रूप में 68 लाख 52 हजार से अधिक महिलाओं के खातों में 642 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरण किया। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने राजनांदगांव एवं आसपास के क्षेत्रों के समग्र



विकास के लिए कई महत्वपूर्ण अधोसंरचनात्मक परियोजनाओं की घोषणा की। इनमें राजनांदगांव-खैरगढ़ राजमार्ग के लिए 200 करोड़ रुपये की लागत से नवीन बाईपास निर्माण, टेड़ेसरा-घुमका-बाकल मार्ग (35 किमी) के चौड़ीकरण हेतु

75 करोड़ रुपयेयुत्तथा धनगंव-इंदामरा-बांकल मार्ग के लिए 30 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रमुख हैं। इसके साथ ही शहरी क्षेत्रों में वार्ड क्रमांक 1, 2, 3 और 8 में विकास कार्यों के लिए प्रत्येक वार्ड को 25-25 लाख रुपये की राशि प्रदान की जाएगी।

डोंगरगढ़ में माँ बमलेश्वरी मंदिर के समीप 15 कमरों के सर्किट हाउस, जनपद पंचायत राजनांदगांव के नवीन भवन के लिए 1 करोड़ रुपये, हाँकी प्रशिक्षण हेतु नए खेल मैदान तथा महिला स्व-सहायता समूहों को पुनः रेडी-टू-ईंट निर्माण की जिम्मेदारी देने की भी घोषणा की गई।

छत्तीसगढ़/राजधानी प्रमुख समाचार

चुनाव परिणाम हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं: बैज

रायपुर। पांच राज्यों के चुनाव परिणामों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि केरल की जनता ने कांग्रेस पर भरोसा जताया। वहां कांग्रेस की सरकार बनेगी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस केरलम की जनता को हार्दिक धन्यवाद देती है कि उन्होंने यूडीएफ को भारी बहुमत से सेवा का मौका दिया है। हमारी जिम्मेदारी हम पहचानते हैं और केरलम की जनता ने जो विश्वास हम में जताया है, हम उस पर खरा

उतरेंगे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि केरलम को छोड़कर जो अन्य नतीजे आये है वो कांग्रेस पार्टी की उम्मीदो से कम है। लेकिन कांग्रेस पार्टी ना निराश है ना हताश। हम विचारधारा की लड़ाई लड़ रहे हैं। एकतंत्र और झूठ के खिलाफ लोकतंत्र और सच की लड़ाई का रास्ता हमेशा लंबा और कठिन होता है। परंतु हम संकल्प और दृढ़ता से एकनिष्ठ होकर आगे बढ़ते रहेंगे।प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि आसाम में चुनाव परिणाम हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं आये। पं. बंगाल में भाजपा नहीं चुनाव आयोग चुनाव लड़ रहा था। भाजपा और चुनाव आयोग के गठबंधन देश के प्रजातंत्र के लिये घातक है। पं. बंगाल टीएमसी की सरकार के खिलाफ एंटी इनकम्बेंसी थी।



राज्य में रोजगार के अवसर घटे बेरोजगारी बढ़ी: शुक्ला

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा सरकार ढाई साल में एक भी युवा को रोजगार नहीं दे पायी है, बल्कि युवाओं से रोजगार छीनने का ही काम किया है। कांग्रेस सरकार में बेरोजगारी दर मात्र 0.60 प्रतिशत था। भाजपा सरकार बनने के बाद बेरोजगारों की संख्या में भारी वृद्धि हुआ है। आज बेरोजगारी दर 4.5 प्रतिशत है। ढाई साल में बीएड शिक्षक, अतिथि शिक्षक, विद्या मितान, क्रेडा के

संविदा कर्मचारी, अनियमित कर्मचारी, विद्युत विभाग के कर्मचारी, वन विभाग के संविदा कर्मचारियों, गोठान महिला स्व सहायता समूह, रिपा के तहत रोजगार प्राप्त कर रहे लोगों को काम से बेदखल किया गया, ई-श्रेणी के लाइसेंस में काम कर रहे युवाओं से भी काम छिन गया है, पूरे प्रदेश में विकास कार्य ठप है कोई नई भर्ती पूरी नहीं हुई है पूर्व से चल रही भर्ती में भी नियुक्तियां नहीं दी जा रही है हर विभाग में काम करने वाले युवाओं से उनका हक अधिकार को छीना गया है। ऐसे में साय सरकार का रोजगार देने का दावा सरासर जुमला और मनगढ़ंत आंकड़े हैं। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि ढाई साल में कितने युवाओं को सरकारी नौकरी में भर्ती का अवसर दिया गया है।



दो दिवसीय लिफ्टिंग चैंपियनशिप राजिम में 8 से



रायपुर। छग पावर लिफ्टिंग एसोसिएशन एवं प्रोटीन हाउस राजिम के तत्वाधान में 8 वीं स्टेट पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप महिला- पुरुष का आयोजन गवर्नमेंट हाइर एक्यूड होमी स्कूल नयापारा राजिम में 8 एवं 9 मई को किया जा रहा है।

छग पावर लिफ्टिंग एसोसिएशन के महासचिव मानिक ताम्रकार एवं प्रोटीन हाउस राजिम के डायरेक्टर निहाल जैन ने बताया कि फूल पावर लिफ्टिंग ओपन बैच ओपन डेड लिफ्ट की प्रतियोगिता होगी। इस प्रतियोगिता में चयनित पावर लिफ्टर रायपुर में आयोजित मिनी इंडिया पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप की प्रतियोगिता में भाग लेगी। प्रतियोगिता अन एक्यूड होगी। प्रतियोगिता 8 मई को प्रारंभ होगी जो 9 मई को शाम 6 बजे समाप्त होगी। प्रतियोगिता में सब जूनियर, जूनियर, सीनियर, मास्टर मेन एवं जूनियर सीनियर महिला को 15000 रुपए कैश अवार्ड एवं बिग कप से सम्मानित किया जाएगा।

7 मई कोमें चिंतन शिविर, मंत्री नेताम करेंगे शुभारंभ

रायपुर। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण भारत सरकार के मत्स्य पालन विभाग और राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में 7 मई को राजधानी रायपुर के एक निजी होटल में एक दिवसीय चिंतन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का उद्घाटन कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री श्री रामविचार नेताम द्वारा किया जाएगा। गिफ्ट तिलापिया की वैज्ञानिक खेती विषय पर केन्द्रित



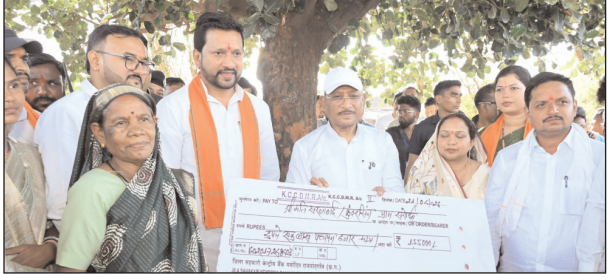
इस शिविर में राज्य के अंतर्देशीय जल संसाधनों को निर्यात की वैश्विक श्रृंखला से जोड़ने पर विस्तृत विचार-विमर्श किया जाएगा। छत्तीसगढ़ के लिए यह गौरव का विषय है कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित 34 कलस्टर्स में से छत्तीसगढ़ को देश के एकमात्र तिलापिया कलस्टर के रूप में पहचान मिली है। वर्ष 2025-26 में भारत का समुद्री उत्पाद निर्यात 72 हजार 325.82 करोड़ रुपये के ऐतिहासिक रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है, जिसे और गति देने के लिए अब तिलापिया जैसी प्रजातियों की वैज्ञानिक खेती पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कार्यक्रम में मत्स्य पालन विभाग की प्रमुख सचिव शहला निगार सहित अन्य अधिकारी और विशेषज्ञ उपस्थित रहेंगे।

लाईवलीहुड कॉलेज जोरा में निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण

रायपुर। मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना अंतर्गत लाईवलीहुड कॉलेज जोरा, रायपुर में जिले के 18 से 45 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से कम समय (3 से 4 माह) के विभिन्न कोर्सों में निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इस योजना के तहत असिस्टेंट इलेक्ट्रिशियन एवं योगा इंस्ट्रक्टर जैसे कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। साथ ही, इलेक्ट्रिक व्हीकल सेक्टर में हितग्राहियों को रोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से ट्रेनिंग पार्टनर Scirobnics Technology Private Limited, रायपुर द्वारा लाईवलीहुड कॉलेज परिसर में ईवी सिकल ट्रेनिंग लैब स्थापित की गई है। इस लैब में इलेक्ट्रिक व्हीकल से संबंधित विभिन्न कोर्स जैसे इलेक्ट्रिक व्हीकल क्वालिटी कंट्रोल इंस्पेक्टर, इलेक्ट्रिक व्हीकल मेंटेनेंस टेक्नीशियन, इलेक्ट्रिक व्हीकल असंबली टेक्नीशियन, बैटरी सिस्टम असंबली ऑपरेटर एवं रिटेल आउटलेट पर ईवी चार्जिंग एवं बैटरी स्वेपिंग गतिविधियों से जुड़े प्रशिक्षण प्रदान किए जा रहे हैं। प्रशिक्षण में युवाओं को तकनीकी कौशल के साथ-साथ कम्प्यूटर स्किल, कम्युनिकेशन स्किल एवं व्यक्तिगत विकास का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। इन कोर्सों के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 8वीं, 10वीं एवं 12वीं उत्तीर्ण निर्धारित की गई है। इच्छुक अभ्यर्थी अधिक जानकारी के लिए कार्यालयीन नंबर 0771-244306 अथवा मोबाइल नंबर 9199321845, 9399791163 पर संपर्क कर सकते हैं।

सुशासन तिहार

चौपाल में मिली राहत, मुख्यमंत्री ने किया त्वरित समाधान



रायपुर। सुशासन तिहार के अंतर्गत ग्राम सरोधी में आयोजित चौपाल में शासन की संवेदनशीलता और त्वरित कार्यवाही का एक भावनात्मक उदाहरण सामने आया। सरोधी की रहने वाली सरलाबाई मरावी ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के

समक्ष अपनी समस्या रखी और कुछ ही पलों में उसका समाधान भी मिल गया। सरलाबाई मरावी, पति श्री लक्ष्मराम मरावी, एक साधारण कृषक परिवार से हैं। उनके पास लगभग 5 एकड़ कृषि भूमि है और परिवार में उनका एक बेटा है।

खेती ही उनके जीवनयापन का मुख्य साधन है। चौपाल के दौरान सरलाबाई ने बताया कि उन्होंने एक माह पहले किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के तहत 1.50 लाख रुपए के ऋण के लिए आवेदन किया था, लेकिन अब तक स्वीकृति नहीं मिली थी। मुख्यमंत्री ने जैसे ही यह बात सुनी, उन्होंने मौके पर ही अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए और तुरंत निराकरण सुनिश्चित कराया। अपनी समस्या का त्वरित समाधान होते देख सरलाबाई भावुक हो उठीं। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उनकी बात इतनी जल्दी सुनी जाएगी और समाधान भी मिल जाएगा।



बैगा समाज के साथ किया सामूहिक भोजन

रायपुर। सुशासन तिहार के तहत जारी राज्यव्यापी दौरे के दौरान मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले के छुईखदान विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत बकरकड़ा पहुंचे। यहां उन्होंने बैगा समाज प्रमुखों और जनप्रतिनिधियों के साथ सामूहिक भोजन कर आत्मीय संवाद किया।